SAPTHAGIRI (HINDI)
SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY
Volume:53, Issue: 10
March-2023, Price Rs.20/-.
No. of pages-56.

तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

मार्च-2023
रु.20/-

तिरुपति श्री कोदंडरामस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव
दि. 20-03-2023 से दि. 28-03-2023 तक

ति.ति.दे.
श्री बालाजी विकलांग न्यास (बर्ड)
(शस्त्र चिकित्सा, अनुसंधान व पुनरावास केंद्र)

विकलांगों को शस्त्र चिकित्सा, अनुसंधान व पुनरावास देने के लिए श्री बालाजी संस्थान न्यास (बर्ड) का प्रारंभ किया गया है। पोलियो व्याधिग्रस्त, सेरिब्रल पाल्सि, जन्मतः प्राप्त विकृतियों, रीड की हड्डी से संबंधित व्याधि से पीडित व्यक्ति को और अस्ति (हड्डी) से संबंधित विकलांग रोगियों के लिए अधुनातन पद्धतियों द्वारा संपूर्ण रूप से मुफ्त में चिकित्सा की जाती है। मानव सेवा ही माधव सेवा मानकर इस चिकित्सा केंद्र के लिए उदारतापूर्वक धनराशि को दान में दें। आयकर कानून के विभाग ८०(जी) के अंतर्गत आयकर से छूट प्राप्त कर सकते हैं। दाता धनराशि को किसी भी राष्ट्रीय बैंक में ''दी एग्जिक्यूटिव अफसर, टी.टी.डी. तिरुपति'' के नाम पर मांगड्राफ्ट या चेक लेकर निम्न सूचित पते को भेजना है।

पता

दी डिप्यूटि एग्जिक्यूटिव अफसर (डोनार सेल),
केंद्रीकृत दाता सेल, आदिशेषु विश्रांत भवन,
अतिरिक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी,
क्यांप कार्यालय के बगल में, तिरुमल।
फोन - 0877-2263472.
(या)
दी डायरेक्टर, बर्ड न्यास, ति.ति.देवस्थान,
तिरुपति - 517 501.
फोन - 0877-2264025.
अन्य विवरण के लिए कृपया संपर्क करें -
दूरभाष - 0877-2264619.
Website : www.tirumala.org,
e-mail : officebirrd@gmail.com
Mobile App: BIRRD Hospital

सञ्जय उवाच -

एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत्।
विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः॥

(- श्रीमद्भगवद्गीता १-४७)

सञ्जय बोले - रणभूमि में शोक से उद्विग्न मनवाला अर्जुन इस प्रकार कहकर, बाणसहित धनुष को त्याग कर रथ के पिछले भाग में बैठ गया।

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे।
श्रीकृष्णार्जुनसंवादेअर्जुनविषादयोगो नाम प्रथमोऽध्यायः॥१॥

यह उपनिषदों द्वारा प्रतिपादित ब्रह्मविद्या योगशास्त्र श्रीकृष्णार्जुन संवाद सम्बन्धी श्रीमद्भगवद्गीता के अर्जुन विषादयोग का प्रथम अध्याय समाप्त।

पुस्तकं हेम संयुक्तं गीतायाः प्रकरोति यः।
दत्वा विप्राय विदुषे जायते न पुनर्भवम्॥

(- गीता मकरंद, गीता की महिमा)

गीता ग्रन्थ का दान सुवर्ण के साथ जो मनुष्य ब्राह्मण (ब्रह्मनिष्ठ) को करेगा वह फिर इस संसार में पैदा नही होगा।

सप्तगिरि पाठकों के लिए सूचना

'सप्तगिरि' एक आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका है। सप्तगिरि के लिए आपका प्रेम अद्वितीय और असाधारण है। 'सप्तगिरि' ति.ति.दे. के और पाठकों के बीच एक पुल के जैसा काम कर रही हैं।

सप्तगिरि पत्रिका के दाम में परिवर्तन हुआ है।

स्वामी के आगमन की अनुभूति अपने ही घर में पाइए।

सप्तगिरि आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका के लिए चंदा भर कर...

श्रीहरि का अक्षर प्रसाद हर महीने स्वीकार कीजिए।

सप्तगिरि

आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

(हिन्दी, तमिल, कन्नड, तेलुगु, अंग्रेजी और संस्कृत भाषाओं में प्रकाशित हो रही है।)

चंदा का विवरण

एक प्रति - रु.20/-

वार्षिक चंदा - रु.240/-

जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) - रु.2,400/-

विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा - रु.1,030/-

दाम में परिवर्तन सितंबर - 2022 महीने से लागू हो गया है।

नये चंदादार पर ही ये परिवर्तन लागू होगा।

अन्य विवरण के लिए कृपया संपर्क करें -
प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति - 517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।
दूरभाषा - 0877-2264363, 2264543.

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति।।

वर्ष-५३ मार्च-२०२३ अंक-१०

विषयसूची

उगादि	डॉ.बी.के.माधवी	07
मत्स्य जयंती	डॉ.एच.एन.गौरीराव	09
श्री वेंकटाचल की महिमा	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	13
लोपामुद्रा	डॉ.के.एम.भवानी	16
महाविद्यालय की गोद में सुंदर मंदिर	डॉ.एस.हरि	18
पुरुष की परिपूर्णता का आधार स्त्री	श्री वेमुनूरि राजमौलि	23
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	24
सुदर्शन चक्र	श्री श्याम सुंदर गिलडा	31
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव, प्रो.गोपाल शर्मा	36
हिंदू मंदिर और ध्वजस्तंभ	आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी	39
श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108	श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया	41
इलायची के स्वास्थ्य लाभ	डॉ.सुमा जोषि	44
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	46
मार्च महीने का राशिफल	डॉ.केशव मिश्र	47
नीतिकथा - समस्या का समाधान	श्री के.रामनाथन	48
चित्रकथा - मत्स्यावतार	डॉ.एम.रजनी	50
क्विज - 8		52

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri.helpdesk@tirumala.org

गौरव संपादक
श्री ए.वी.धर्मारेड्डी, आई.डी.ई.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी(एफ.ए.सी), ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
डॉ.के.राधारमण

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम

उपसंपादक
श्रीमती एन.मनोरमा

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
पुस्तक बिक्री केंद्र & मुद्रणालय,
ति.ति.दे., तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

एक प्रति .. रु.20-00
वार्षिक चंदा .. रु.240-00
जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) .. रु.2,400-00
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा .. रु.1,030-00

मुखचित्र - श्री कोदंडरामस्वामीजी, तिरुपति।
चौथा कवर पृष्ठ - उभयदेवेरियों सहित श्री वेदनारायण स्वामीजी, नागुलापुरम्।

अन्य विवरण के लिए
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।

- प्रधान संपादक

संपादकीय

नारी की महानता

भारतीय संस्कृति और आचरण के संस्कारों की आधार शिला मनुस्मृति है। मनुस्मृति में भारतीय आचार संहिता के समग्र संस्कार व्यक्त हुए हैं। उस में कहा गया है **'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तु न पूज्यंते सर्वास्तत्राफलाः क्रियाः॥'** जहाँ स्त्रियों की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं और जहाँ स्त्रियों की पूजा नहीं होती है, उन का सम्मान नहीं होता है। वहाँ किए गये समस्त अच्छे कर्म निष्फल हो जाते हैं। भारतीय धर्म का यह आचरण आज भी शिरोधार्य है। इसी संस्कार के कारण ही आज भी भारत विश्व के देशों से वंदनीय है। नारी की वंदना भारतीय संस्कृति की वंदना है। भारतीय नारी गृहलक्ष्मी ही नहीं बल्कि घर का मूलाधार भी है। नारी के बिना कोई घर घर नहीं कहलाता है। स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों के सहचर्य से ही सृष्टि-रचना सुसाध्य एवं सार्थक हो सकती है। दोनों ईश्वरीय देन हैं। दोनों के योग से ही तीसरे का उदय होता है। इस अनिवार्य धर्म को स्वीकारने से ही दोनों के बारे में सही विचार उत्पन्न हो सकते हैं। स्त्री-पुरुष दोनों प्रकृति की देन है। ब्रह्म के द्वारा नियमित सृष्टि रचना के युगल रूप स्त्री-पुरुष हैं। दोनों के समतुल्य से सृष्टि रचना संभव है। समस्त प्राण कोटि में इसी समादर युगल रूप को देखते हैं। प्रजानन और शिशु-पालन में स्त्री की महानता को देखते हुए ही वेदों, उपनिषदों एवं पुराणों में स्त्री को उच्च स्थान दिया गया है। प्रह्लाद, मार्कंडेय जैसे भक्त प्रवरों ने अपनी माँ के आशीर्वाद से ही उन्नत भक्त-जीवन को प्राप्त किया है। मनुष्य को जन्म देना, उसे व्यक्तित्व प्रदान करना, उस के सुखी जीवन के लिए हर संभव प्रयास करना सिर्फ स्त्री या माँ से संभव है। स्त्री पारिवारिक परिदृश्य में माँ, बहन, पुत्री, पुत्र बधु आदि रूप ही अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। भारतीय पारिवारिक जीवन के ये ही मूल स्तंभ हैं। वैदिक युग से लेकर आधुनिक युग तक भारत में स्त्री को अत्यंत गौरव-गरिमामय स्थान मिला है, यह भारतीय संस्कृति की महानता है। आधुनिक युग में स्त्री घर के बाहर और भीतर दोनों क्षेत्रों में कमर कस कर अपने परिवार की भलाई के लिए कार्यरत है। स्त्री के बिना कोई-पर्व, त्योहार, व्रत, उपवास, उत्सव, पूजा, यज्ञ-यागादि क्रतु अनुष्ठान का सफल व सार्थक होना असंभव है।

फाल्गुण मास महिलाओं का ही मास है। इस फाल्गुणी में अनेक व्रतों को महिलाएँ पूरी निष्ठा और श्रद्धा के साथ करती हैं। अपने परिवार के लिए सारे शुभों की कामना करती हैं, इष्ट देव की पूजा करके आशीर्वाद लेती है। कालचक्र में फाल्गुण के पूरे होने फिर चैत्र के साथ नववर्ष के शुभारंभ होने का पुण्यकाल शुरू होता है। तेलुगु भाषी इसी को 'उगादि' के रूप में मनाते हैं। उत्तरायण के इस पुण्यकाल में श्री महाविष्णु के मत्स्य अवतार, श्रीराम अवतार और श्रीलक्ष्मी संबंधी जयंतियों का आगमन होता है। हरि भक्त इस पुण्यकाल में मत्स्य अवतारी श्रीहरि की विशेष और श्रीराम की पूजा करके अपने जीवन को धन्य बनाते हैं। इन दोनों पर्व के दिनों में परिवार की स्वामिनी स्त्रियाँ हर्षोल्लास के साथ भाग लेना ही नहीं पूरे परिवार को उल्लासमय बनाती हैं। सहनशीलता की देवी भूदेवी, संपदा की माई श्री महालक्ष्मी, ज्ञान की खान सरस्वती, शक्ति का प्रतीक पार्वती की कृपा सप्तगिरि पत्रिका के सुधी पाठकों को प्राप्त हो... ऐसी मंगल कामनाएँ...

उगादि

- डॉ.बी.के.माधवी,
मोबाइल - 9441646045.

गीताचार्य ने कहा कि ''कालः कलयतामहम्'' इसीलिए काल को व्यर्थ नहीं करते हुए सद्विनियोग करना भगवान की पूजा करने के समान होता है। परमात्मा एक होने पर भी हर एक को अपना अपना एक रूप आराध्य होता है। भक्त जन अपनी अभिरुचि के अनुसार अपने इष्टदैव की आराधना करते हैं। सब जगह परमात्मा का दर्शन करनेवाला व्यक्ति ज्ञानी होता है।

प्रकृति मनुष्य को अनेक प्रकार से सहायता करती है। प्रकृति में वह प्राण शक्ति होती है जो सूखे को भी जिला सकती है। चेतनाहीन प्राणी में चेतना को भरती है। प्रकृति मनुष्य की सहचरी है। प्रकृति के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा है। मृग, नग, खग, तरु, लतादि, अंधकार, प्रकाश आदि प्रकृति के ही अंग हैं। सब प्रकृति के वरप्रसाद हैं। पृथ्वी, पानी, आग, हवा, आकाश आदि प्रकृति के ही रूप हैं। इन को हानि पहुँचाना प्रकृति को हानि पहुँचाना ही है। इन के बिना मनुष्य का जीवन खतरे में पडता है। प्रकृति को होनेवाली हानि के बारे में इसलिए मनुष्य को सोचना चाहिए।

अंतरिक्ष या आकाश के बारे में सोचने पर सब से पहले सूर्य, चंद्र और तारे आदि ग्रहों की ही याद आती हैं। ये ग्रह भी प्रकृति के ही वरदान हैं। इन का संबंध न केवल मनुष्य के साथ है बल्कि प्रकृति के साथ भी इन का संबंध है। कालखंड या काल विभाजन भी प्रकृति के साथ संबंध रखता है। ऋतु और ऋतुओं से संबंध रखनेवाले पर्व, त्योहार भी प्रकृति से ही संबंध रखते हैं। हिंदुओं का खासकर तेलुगु भाषियों का त्योहार 'उगादी' भी प्रकृति के साथ संबंध रखनेवाला त्योहार है।

भारतीय पर्व, त्योहार प्रकृति के ग्रह, उपग्रहों की गति पर निर्भर होते हैं। ग्रहों की गति के आधार पर नक्षत्र, मुहूर्त आदि की गणना की जाती है। उन्हीं के अनुसार त्योहारों के समय का निर्धारण किया जाता है। यह खगोल और गणित शास्त्र पक्का है। ऋषी और मुनियों के द्वारा निर्धारित यह मुहूर्त काल निर्णय अत्यंत सठीक और पक्का होता है। सिर्फ 'उगादि' ही नहीं बल्कि प्रत्येक त्योहार या पर्व का काल निर्धारण इसी रूप में किया जाता है। मानव का जीवन भी कालधर्म के अनुरूप ही होता हैं। 'उगादि' पर्व के दौरान जो चट्नी बनायी जाती है वह भी मनुष्य के शरीरधर्म के अनुकूल और कालधर्म के अनुकूल होता है। भारतीय काल चक्र में एक शताब्दी के साठ साल होते हैं। उसी को साधारणतया युग कहा जाता है। यानी युग के साठ साल माने जाते हैं। हिंदू धर्म के इस काल चक्र के प्रत्येक साल के अपने अपने अलग नाम हैं। ये ही 'प्रभव', 'विभव' आदि साठ नामों से जाने जाते हैं।

'उगादि' का त्योहार हर साल चैत्र शुद्ध पाड्यमि के दिन आता है। कहा जाता है कि ब्रह्मदेव ने इसी दिन सृष्टि की रचना शुरू की थी। तेलुगु का 'उगादि' शब्द संस्कृत 'युगादि' शब्द का विकृत रूप है।

भारतीय खगोल शास्त्र में ग्रहों की गति और यान दोनों भी महत्व रखते हैं। ग्रहों की स्थिति के अनुसार ही मनुष्य के जीवन में होनेवाले शुभ और अशुभ की गणना की जाती है। इस में ग्रहों की स्थिति बहुत कुछ काम करती है। ग्रहों के आधार पर ही राशिफल की गणना भी की जाती है। यानी भारतीय पर्व और उस की गणना खगोल शास्त्र के अनुसार ही होता है, साथ ही ग्रहों के आधार पर काल के साथ राशिफल की गणना की जाती है।

इसलिए 'उगादि' नव वर्ष का जो पहला दिन माना जाता है। उस दिन 'पंचांग श्रवण' के साथ राशिफल का भी श्रवण किया जाता है। साल के आरंभिक दिन में जो कुछ भी घटता है वही पूरे साल संभव होने का विश्वास भी किया जाता है। इसलिए प्रकृति के साथ सीधा संबंध रखनेवाला पर्व 'उगादि' मनुष्य के शुभ-अशुभ के नियमन करनेवाला दिन भी माना जाता है।

मानव का जीवन कालधर्म के अनुरूप होता है। 'उगादि चट्नी' शरीर धर्म और कालधर्म के अनुरूप होना है। कालधर्म का हमें स्वागत करना हैं। 'उगादि' के रूप में, 'युगादि' पर्व के रूप में जो पर्व हम मनाते हैं उसकी परंपरा और उस संप्रदाय का वैशिष्ट्य जानने की आवश्यकता है। क्यों कि प्रत्येक मनुष्य प्रति दिन नयी आशाओं एवं नयी उमंगों को लेकर ही प्रतिदिन सूर्योदय का स्वागत करता है। ऐसे में जीवन में नव वसंत लानेवाले वर्ष का आरंभिक दिन का स्वागत क्यों नहीं करेगा? बल्कि अधिक अपेक्षाओं के साथ नव वर्ष के आरंभिक दिन का स्वागत करता है। संस्कृत में एक श्लोक प्रचलित है- ''ज्ञात्वा कर्माणि कुर्वीत''। इस का मतलब जिस संप्रदाय का हम आचरण कर रहे हैं उस के बारे में जानना हमारा धर्म है।

साधारणतया 'उगादि' के दिन अभ्यंगन स्नान करने के बाद इष्ट देवता की पूजा करके 'उगादि चट्नी' स्वीकार करनी है। इसके बाद 'पंचांग श्रवण' में भाग लेना है। उगादि के दिन जो चट्नी बनायी जाती है, उस में संप्रदाय और आधुनिकता दोनों है। आधुनिक वैद्यशास्त्र के अनुसार विटमिन, खनिज, लवण जैसे पोषकों की गणना और आहार द्रव्यों में पोषक तत्वों का होना आवश्यक है। संप्रदाय के अनुसार इस चट्नी में छे प्रकार के पोषक तत्व और छे प्रकार के स्वाद होते हैं। छेः स्वादों के सिद्धांत का अनुसरण करनेवाले, मीठा, कड़ुवा, नमक, मिर्ची, इमली, फीका (वगरु) ये छः स्वादों को प्राथमिकता देते हैं। आयुर्वेदशास्त्र के अनुसार इन छेः स्वादों में एक प्रकार की समतुल्यता होती है जो स्वास्थ्य के लिए अच्छी है।

अपने साधारण भोजन में भी इन छः स्वादों का ही महत्व होता है। इस खाने को ही षड्रसोपेत खाना माना जाता है। इस में सारे पोषक भी होते हैं। यह स्वादों का मिश्रित रूप है। विकास या प्रगति चाहनेवाला मनुष्य इसी प्रकार मिश्रित स्वाद यानी सुख-दुख, सफलता-विफलता, लाभ-नष्ट आदि से गुजरता है। इस रूप में उगादि पर्व के दौरान बनायी जानेवाली चट्नी परंपरा के अनुसार होते हुए जीवनोपयोगी दर्शन प्रस्तुत करती है। तभी जीवन सुखमय होगा। यही 'उगादि' त्योहार और 'उगादि चट्नी' और मानव जीवन का रहस्य भी है। बुराई को छोडकर जीवन में प्रगति का आह्वान करना है। सनातन धर्मों का आचरण करना है। भगवान के आशीर्वादों से 'उगादि' के दिन से पूरे साल भर की कामना इस पर्व के द्वारा की जाती है। नाम अलग-अलग होने पर भी अंतर्लीन से रहे भाव एक ही है। यह जगद्विदित बात है कि हर उत्सव मानव को उत्साह और उल्लास दिलाने के लिए ही है। सबको शुभ और क्षेम होना ही इन उत्सवों का अंतरार्थ है। 'उगादि' पर्व को मनाने के पीछे यही दर्शन छिपा हुआ है। जो सांप्रदायिक होते हुए भी वैज्ञानिक व आधुनिक है। परंपरा और आधुनिकता दोनों के योग से ही मानव जीवन सुखमय एवं सार्थकमय हो सकता है। कोरी परंपरा का अनुसरण और कोरी आधुनिकता का आचरण दोनों मानव-जीवन के लिए घातक ही होंगे। तेलुगु के राज्यों में प्रचलित यह 'उगादि' त्योहार हमें यही शिक्षा देता है।

''सर्वेजना सुखिनो भवन्तु।''

दुष्ट संहार, शिष्ट रक्षण, धर्म की स्थापना तथा लोकोद्धार के लिए लोक पालक श्री महाविष्णु ने अनेक अवतार लिए हैं। उन अवतारों में मत्स्य अवतार सर्वप्रथम अवतार है। यही इस अवतार का महत्व है। मत्स्य अवतार दो सत्कर्मों के लिए हुआ था। एक कल्पांत के महाप्रलय से जीव कोटि को बचाना तथा सोमकासुर से वेदों की रक्षा करना। मत्स्य अवतार के बारे में मत्स्य पुराण, विष्णु पुराण, गरुड़ पुराण जैसे अनेक पुराणों में उल्लेख प्राप्त होते हैं।

मत्स्य जयंती

भगवान के अन्य नाम :

मत्स्य नारायण, वेदरक्षक, मनुकल्प, वेद नारायण, मीन नारायण आदि मत्स्य भगवान के अन्य नाम है।

मत्स्य अवतार को लेकर दो कथाएँ प्रचलन में हैं-

महाप्रलय से जीव कोटि को बचाने की कथा :

पुराणों के अनुसार ब्रह्मदेव का एक दिन कल्प की अवधि है। प्रत्येक कल्प के अंत में अर्थात् सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग और कलियुग के बाद महाप्रलय होता है, जो नैमित्तिक प्रलय कहा जाता है। जब ब्रह्मदेव का एक दिन समाप्त होता है तो विश्व का नाश होता है। दिनोपरांत ब्रह्मदेव सो जाते हैं और जब जागते हैं तो संसार का पुनःनिर्माण करते हैं और युग का आरम्भ होता है। सत्ययुग के दौरान विष्णु भगवान ने मत्स्य अवतार लिया था।

मत्स्य अवतार की विस्मयकारिणी कथा इस प्रकार चलती है। कल्पांत के पूर्व द्रविड़ राजर्षि सत्यव्रत, जो बड़े उदार स्वाभव के थे, भगवान विष्णु का तप करते थे। वे भगवान विष्णु के परम भक्त थे। एक दिन सुबह के

- डॉ. एच. एन. गौरीराव,
मोबाइल - 9742582000.

नागुलापुरम्, श्री वेदनारायण स्वामीजी के मंदिर में सूर्य पूजा उत्सव प्रसिद्ध है। मत्स्य जयंती त्योहार के समय सूर्य की किरणें साल के तीन दिनों के लिए सीधे गर्भगृह में स्वामी वेदनारायण चरणों पर पड़ती हैं। यहाँ अत्यंत वैभव से पाँच दिनों तक प्लवोत्सव आयोजित करते है। ब्रह्मोत्सव, वैकुंठ एकादशी तथा मत्स्य जयंती यहाँ के प्रमुख समारोह हैं।

समय सत्यव्रत कृतमाला नदी में नहाकर संध्या वन्दन करते हुए सूर्य को अर्घ्य देने के लिए अंजलि में जल लिए तो उस जल के साथ एक छोटी सी मछली भी आई। सत्यव्रत ने उसे फिर से पानी में छोड़ दिया। तब उस मछली ने राजा से करुणापूर्वक कहाँ, ''हे राजन! मुझे इस नदी में बड़ी मछलियाँ खा जाती हैं। कृपया मेरी रक्षा करें।'' राजा के मन में दया उत्पन्न हुई। राजा ने उस मछली को अपने कमंडल में डाल दिया। थोड़े ही समय में वह कमंडल से भी बड़ी हो गयी। इससे उन्होंने मछली को एक घडे में डाला। फिर वह घडे से भी बड़ी हो गयी। इससे उन्होंने मछली को एक सरोवर में डाला। फिर वह सरोवर से भी बड़ी हो गयी। राजर्षि ने उसे एक नदी में छोड़ा तो वह नदी से बड़ी हो गयी। अंत में राजा ने उसे समुंदर में छोड़ दिया। उस समुंदर में वह विराट रूप में बदल गयी। तब राजा को संदेह हो गया कि यह सुनहरा मनमोहक मछली कोई सामान्य नहीं है। इसलिए

विनय भाव से मछली से पूछा, ''आप कोई पुण्यात्मा, सर्वशक्तिमान है। कृपया आप मुझे निज रूप दिखाने की कृपा करें।'' तब भगवान श्री महाविष्णु वहाँ प्रत्यक्ष हुए। राजर्षि बहुत खुश होकर अनेक रूपों में उनकी स्तुति की। इससे प्रसन्न श्री महाविष्णु राजा को चेतावनी देते हुए कहा, ''हे राजन! आज से सात दिनों के बाद विनाशकारी नैमित्तिक महाप्रलय होगा। उसमें तीनों लोक डूब जाएँगे। महाविनाश होगा। इससे एक सशक्त तथा सुदृढ़ नौका तैयार करके रखना। जब प्रलय शुरू होगा तब जगत की औषधियों, जीव जंतु के सूक्ष्म शरीर और सब प्रकार के बीज को लेकर सप्तर्षियों के साथ उस नाव में तैयार होकर रहना। एक रस्सी के साथ नौका को मेरी सींग से बांध देना। मैं सबकी रक्षा करूँगा।'' ऐसा कहकर भगवान वही अन्तर्धान हो गए। राजा ने भगवान की बातों के अनुसार सारी तैयारियाँ कर ली। सातवें दिन सृष्टि में प्रलय प्रारम्भ हो चुका था। धीरे-धीरे चारों ओर जल ही जल हो गया। जल के अतिरिक्त कहीं कुछ भी दिखाई नहीं दिया। तब मछली के रूप में भगवान ने सब के हित की रक्षा करने प्रत्यक्ष हुए। उनका शरीर बड़ा देदीप्यमान था। मस्तक पर दो सींग धारण किये हुए थे। नाव को रस्सी के साथ और उसे मछली के सींग के बांध दिया गया। मछली उस

नाव को खींचते हुए हिमालय की चोटी से बांध दिया। वही चोटी 'नौकाबंध' कहा जाता है। उसी समय मत्स्य नारायण ने राजा सत्यव्रत एवं सप्तऋषियों को धर्मकथा सुनायी। वही मत्स्य पुराण है, जो अष्टादश पुराणों में से एक मुख्य पुराण है। भगवान ने सत्यव्रत को सांख्य योग क्रिया तथा आत्मज्ञान का भी उपदेश दिया था। आगे राजा सत्यव्रत ज्ञान-विज्ञान से युक्त होकर वैवस्वत मनु कहलाए और हम सब उसी मनु की सन्तान हैं। उक्त नौका में जो बच गए थे, उन्हीं से ब्रह्म द्वारा संसार में पुनःसृष्टि कार्य आरंभ हुआ।

सोमकासुर वध :

सोमकासुर नामक एक अति पराक्रमी राक्षस हुआ करता था। धार्मिक ग्रंथों के अनुसार कल्पांत में महाप्रलय का आरंभ हुआ। वह समय ब्रह्माजी के सोने का समय था। कल्पांत में जब ब्रह्माजी सोने के समय एक जम्हाई ली, तब चार वेद उनके मुँह से बाहर आए। इस अवसर का लाभ उठाते हुए सोमकासुर ने वेदों को चुरा लिया और समुद्र के अथाह गहराई में चला गया, ताकि ऐसा करने से कोई भी उसका पता नहीं लगा सके। सोमकासुर द्वारा वेदों को चुरा लेने के कारण ज्ञान लुप्त हो कर लोक में अज्ञानता का अंधकार फैल गया। तब भगवान श्री महाविष्णु जी ने वेदों की रक्षा के लिए तथा दुष्ट संहार केलिए मत्स्य अवतार का धारण किया। महाप्रलय शांत होने के पश्चात मत्स्य नारायण समुद्र के भीतर जाकर सोमकासुर का वध करके और वेदों की रक्षा की और भगवान ब्रह्माजी को वेदों को सौंप दिया। फिर से सारे संसार में ज्ञान का प्रसारण हुआ।

मत्स्य जयंती का अनुष्ठान :

प्रलय के समय लोक कल्याणार्थ जब मत्स्य का अवतार हुआ, उस दिन को मत्स्य जयंती के रूप में मनाया जाता है। हिन्दू पंचांग के अनुसार चैत्र मास में शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को मत्स्य जयंती के रूप में मनाया जाता है। इस दिन भगवान नारायण ने दुपहर के बाद के समय में मत्स्य रूप धारण कर विश्व का कल्याण किया था। मत्स्य जयंती भगवान विष्णु को समर्पित है। मत्स्य जयंती के दिन, भक्त सुबह जल्दी उठते हैं, स्नान करके शुद्ध होते हैं और भगवान मत्स्य (भगवान विष्णु) के नाम पर संकल्प लेकर व्रत रखते हैं। श्रद्धालु उपवास रखते हैं। मत्स्य भगवान की पूजा करके प्रार्थना करते हैं। फिर पूजांत में अपना उपवास तोड़ते हैं। जयंती के दिन मत्स्य नारायण मंदिर और विष्णु मंदिरों में विशेष अलंकार और पूजा की जाती हैं। घरों में भी विधि-विधान से मत्स्य नारायण को चंदन, अक्षत आदि चढ़ाते हैं। ध्यान करके विशेष रूप से लाल कनेर के फूल समर्पित किए जाते हैं। अनार का फलाहार चढ़ाया जाता है। सूजी के हल्वे का भोग लगाते हैं। अंत में आरती उतारी जाती है। भक्त भगवान मत्स्य का आशीर्वाद पाने के लिए पवित्र मंत्रों का पाठ करते हैं। पूजा के अंत में मत्स्य अवतार की कथा का श्रवण किया जाता है।

अप्रैल 2023

०३ से ०५ तक तिरुमल श्री बालाजी का वसंतोत्सव
०६. तुंबुरुतीर्थ मुक्कोटी
१४. तमिल नूतन वर्ष, डॉ.बी.आर.अंबेडकर जयंती
२२. गंगा नदी पुष्कर प्रारंभ, परशुराम जयंती
२३. अक्षयतृतीया
२५. श्री रामानुज जयंती, श्री शंकराचार्य जयंती
२६. श्रीराम जयंती
२९ से मई ०१ तक तिरुमल श्री पद्मावती श्रीनिवास का परिणयमहोत्सव

राजर्षि सत्यव्रत विष्णु भगवान के प्रति अपार भक्ति रखते थे। उसकी भक्ति से संतुष्ट होकर भगवान विष्णु ने राजा की तथा सारे विश्व की रक्षा करने के अलावा उन्हें आत्मज्ञान का बोध कराया। आत्मज्ञान प्राप्त करके सत्यव्रत का जीवन धन्य हो उठा। हम भी मत्स्य जयंती के दिन मत्स्य नारायण अर्थात् श्री महाविष्णु जी की भक्तिपूर्वक पूजा करके भगवान की शरणागति में जाने से हमारे समस्त संकट दूर हो जाते हैं। तथा केतु ग्रह के दोषों से मुक्त हो जाते हैं। साथ ही हमारी मनोकामनाओं की पूर्ति भी होती है।

मत्स्य नारायण के मंदिर :

आंध्रप्रदेश के चित्तूर जिले में नागुलापुरम् नामक गाँव में वेद नारायण मंदिर है। यह मंदिर मत्स्य भगवान को समर्पित है। यहाँ भगवान की स्वयंभू मूर्ति है। माना जाता है कि मत्स्य भगवान वेदों को इसी जगह पर ब्रह्माजी को सौंपकर यही शिला रूप में स्थापित हो गये। इससे यह जगह वेद पूरी, वेदारण्य क्षेत्र, हरिकंठापुरम नामों से प्रसिद्ध हो गया। भगवान को ढूंढते हुए माता महालक्ष्मी वैकुंठ से आकर भगवान के सामने शिला रूप में स्थापित हो गयी। गर्भगृह में भगवान के दो हाथों में शंख तथा चक्र हैं। तीसरा हाथ वरदहस्त में, चौथा हाथ अभय हस्त में है। कटि से नीचे तक का शरीर मत्स्य (मछली) के रूप में है। भगवान के दर्शन करने लाखों में लोग यहाँ आते हैं। इस प्रसिद्ध मंदिर का निर्माण विजयनगर साम्राज्य के राजा श्रीकृष्णदेवराय ने करवाया था।

मत्स्य नारायण मंदिर बैंगलोर के ओंकार आश्रम में है। यहाँ की मूर्ति का ऊपर का शरीर भगवान विष्णु के समान है। कटि के नीचे मछली का शरीर है। यहाँ भगवान चतुर्भुजधारी हैं। दो हस्तों में शंख, चक्र हैं। तीसरा हस्त वरद मुद्रा में तथा चौथा हस्त अभय मुद्रा में है।

नीति पद्यम्

आन्ध्र देश के कबीर श्री वेमना

(संत वेमना की कुछ चुनी हुई रचनाएं)

मिथ्याडंबर

कल्लटिकेकु भूति गट्टिगा बेट्टिन
नंदु लोनि कंपु लडग नट्लु
मेडनु द्राडु वेय मेरयुचु द्विजुडौने?
विश्वदाभिरामा विनुरवेमा ।।१८।।

गले में जनेऊ डाल लेने मात्र से कोई द्विज नहीं बन सकता। उसकी बुराइयां नहीं छूट जाती हैं। मदिरा के घड़े के ऊपर पवित्र होम-भूति लगाने से उसकी दुर्गंध कहीं दूर हो जाती है? वह पीने योग्य बन जाता है?

श्री वेंकटाचल की महिमा

(हिंदी गद्यानुवाद)

द्वितीय आश्वास

तेलुगु मूल
मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

हिंदी अनुवाद
आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
मोबाइल - 7842441868

तरिगोंडा नरसिंह

हे व्यास मुनीश्वर हृदय निवास! चिद्विलास! क्षीर सागर शयन! वासव वंदित पदयुगल! भास्वर तरिगोंडा नृसिंह! पापविनाश!

शौनकादि के प्रश्न :

पुराण प्रवचक सूत को देखकर शौनकादि मुनियों ने कहा। "विश्व भर में होनेवाले अनेक कार्यों का विवरण आपने हमें दिया है और भी आप बता सकते हैं। इसलिए विष्णु-कथाओं को हमें क्रम से बताइए हे सूत! हे विमल धीसमेत! अपनी माया से विष्णु अनेक स्थलों पर एक ही बार वास करके अपने भक्तों को नायक के रूप में दिखाई देते हैं। बाकी को नहीं है, ऐसा आपने कहा था हे सूत! अंजनाद्री के समान श्री स्वामी पर जो कोई मन लगायेगा, जो कोई प्रार्थना करेगा उन के पास ही हरि नित्य बन कर रहते हैं। ये कैसी रीतियाँ हैं बताइए सूत!"

सूत का समाधान :

"व्यास मुनि के द्वारा मुझे सुनायी गयी कथा को ही मैं आप को सुनाऊँगा। सनकसनादि मुनियों के शाप से वैकुंठ द्वार पालक जय और विजय ने धरती पर जन्म लिया। वे ही हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप हैं। वे साधु जनों को बाधा पहुँचा रहे तो चक्री ने वराह अवतार लेकर हिरण्याक्ष का संहार किया। इस से कुपित होकर हिरण्यकश्यप साधु जनों को और सताने लगा। इससे श्रीहरि ने नरसिंह अवतार लेकर उसका संहार किया। साथ ही हिरण्यकश्यप के पुत्र परम विष्णु भक्त प्रह्लाद की रक्षा की। वे हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप ही बाद में रावण और कुंभकर्ण बने। दोनों ने धरती पर रहनेवाले मुनिगण और साधु लोगों को सताने लगे। रावण और कुंभकर्ण के दुर्गुणों को मुनियों और देवताओं ने विष्णु के पास जाकर बताया। "हे देव देव! रावण की बाधाओं से हमें मुक्त करके हमारा उद्धार कीजिए। हे परम पुरुष!"

इंद्रादि देवताओं और मुनियों का क्षीरसागर जाना :

क्षीरसागर के उत्तर भाग में खडे होकर उन लोगों ने विष्णु भगवान से विनति की। व्यापकता के साथ अपनी बाधाओं और यातनाओं को श्रीहरि को

बताया। ''हे देव! क्षीरसागर वासा! बहु दीन दयालु! सुनिए! रावण नामक एक राक्षस भयानक पापकर्मी बन कर पृथ्वी पर पुण्यात्माओं को पीडा पहुँचा रहा है। उस का संहार आप को ही करना चाहिए। दूसरा कोई नहीं कर सकता है। हे माधव!'' इस रूप में बहुविध प्रार्थना की। साथ ही 'विष्णोहो' कहते हुए उन्हें पुकारा। तब एक विष्णु दूत ने आकाश में दिखाई दे कर इस रूप में कहा। ''वनजाक्ष! यहाँ नहीं है। अवनि में पर्वत के ऊपर बसे हुए हैं। तुम लोग वहाँ जाइए। यहाँ कोई कोलाहल मत कीजिए।'' उस के इस रूप में कहने पर मुनिगण और देवतागण आश्चर्यचकित हो गए। फिर वे वही हरि के लिए जगह जगह खोज करने लगे। सारे पहाड छान मारे। हरि कहीं भी दिखाई नहीं पडे। हरि के दिखाई नहीं पडने से हरि पर्वत पर नहीं बल्कि वैकुंठ में रहेंगे, समझ कर वैकुंठ मार्ग जाने लगे तब।

वैकुंठ मार्ग से नारद का आगमन :

शुभ्र भास्वर शरीर पर श्वेत बभूति चमकते, धवल संपूर्णचंद्र कलंक हीन कृष्णमृग चर्म प्रकाशित होते, सुरचिर जटाजूटाएँ सर पर शोभित होते, ललाट पर चंदन बिंदु चमकते, सदा नारायणाक्षर बजानेवाली वीणा को भुजा पर रख कर श्रीहरि की स्तुति में लीन नारद आते उन को दिखाई पडे। नारद को देखकर उन को आनंद हुआ। इंद्रादि सभी ने उन से कहा। ''हे नारद! आप सदा त्रिभुवनों में विचरण करते रहते हैं। अनेक रहस्य इसलिए आप को मालूम हैं। इसलिए आप महात्मा है। हे मुनिश्रेष्ठ! श्रीशैल भू प्रदेश में रावण पहुँच कर वहाँ के लोगों को बहुत सता रहा है। उसे किसी भी रूप में रोकना चाहिए। यह काम सिर्फ रमापति ही कर सकते हैं। इसलिए हम विष्णु देव की खोज करते क्षीरसागर पर गए। वहाँ कितनी स्तुति करने पर भी हमें श्रीहरि के दर्शन नहीं हुए। हमारी बातें सुनने के लिए वे नहीं आए। इतने में वहाँ पर एक शंख, चक्रधारी ने हम से कहा कि हरि यहाँ नहीं है। भूलोक में विपुल पर्वत पर हैं। वहाँ जाइए। यह सुन कर विष्णु की खोज करते हम निकले। किंतु कहीं भी हमें विष्णु दिखाई नहीं पडे। कानन, जंगल सब जगह छाने मारे। इस मार्ग में हमें कहीं भी हरि दिखाई नहीं पडे। हमें लगा कि हरि अब वैकुंठ में ही होंगे। रावण के वृत्तांत को बताने हम इस मार्ग से हम वैकुंठ जाना चाहते हैं। हे मुनींद्र! विष्णु को सुनाने के लिए ही हम निकले।'' उन की बातें सुनकर नारद ने कहा।'' हे मुनिगण।! वैकुंठ में विष्णु को देखने मैं भी गया था। किंतु वहाँ किसी ने बताया कि विष्णु भगवान वैकुंठ छोडकर अपनी देवेरी के साथ भूतल पर्वत पर बसे हुए हैं। वहीं जाने की उसने मुझे भी सलाह दी है। इसलिए मुझे भी वहीं जाना चाहिए। अब हम सब को ब्रह्म के पास जाकर उन के बारे में पता लगाना चाहिए।''

इंद्रादि का सत्य लोक जाना :

नारद के इस रूप में कहने पर देवेंद्र, देवतागण और मुनिगण सब सत्य लोक के लिए निकले। महान चतुर्मुखी, कर चतुष्टय से शोभित कमलभव को उन्होंने वहाँ पर देखा। तप्त कनक देहवाले, लोकवंदित, द्रष्टालोचक, महनीय दंड कमंडल हस्ती, बालभानुप्रभा शोभित, दिव्य पद्मासन पर आरूढ, परम तापस जनों से परिवेष्ठित निर्मल, सत्कर्म, श्रेष्ठ, सदा परमात्मा के ध्यान में परवश ब्रह्म को देखा। सदा धर्म, शास्त्रानुसार सृजन करनेवाले, सावित्री, गायत्री, भारती के द्वारा पूजित जलजभव को देखा। तब देवतागण, मुनिगण को ब्रह्म ने देखा। तब उन्होंने सविनय उन्हें प्रणाम करके हाथ जोड कर खडे रहे। तब ब्रह्म ने उन से पूछा। ''आप सब यहाँ क्यों आए हैं? यहाँ आप बैठ जाइए।'' कहते बडी करुणा और आदर के साथ उन्हें बिठाया। बाद में इस रूप में कहा। ''आप सब कुशल-मंगल तो हैं न?'' तब उन्होंने कहा। ''आप की ललित करुणा से हम सब कुशल हैं। किंतु धरती पर अब एक संकट आ पडा है।

वह ऐसा है कि रावण से प्रेरित होकर राक्षस श्रीशैल भू भाग में पहुँच कर हमें और जनों को बहुत सता रहे हैं। वे ऐसा कर रहे हैं। ''मनुष्यों को पकड कर उन्हें खाते उनका विनाश करते, पापकर्मी बन कर गर्व के साथ मदमत्त होकर मुनियों को बाधाएँ पहुँचा रहे हैं। इस प्रकार राक्षसों को प्रेरित करके साधुओं को सतानेवाले रावण को मारे बिना लोकों में शुभ नहीं होंगे। उस पापात्म को शाप देने हम शांतात्म हैं। शाप देने में असमर्थ हैं। अब हमारे कष्ट श्रीहरि ही दूर कर सकते हैं। हम ने क्षीरसागर में, वैकुंठ में, त्रिभुवनों में हरि की खोज की है। किंतु वहाँ कहीं हरि दिखाई नहीं पडे। इसलिए हम आप के पास पधारे हैं। आप की शरण में आए हैं। श्रीहरि के निवास स्थान के बारे में अब आप को ही हमें बताना होगा। आप सर्वज्ञ हैं। अवश्य हरि के विहार स्थल को जानते हैं। हमें उनके बारे में कुछ भी मालूम नहीं है। हमारे तप-

जप में विघ्न डाल कर हमें बहुत कष्ट देनेवाले लोगों का निवारण करने की शक्ति सिर्फ श्रीहरि को ही है। इसलिए उन की इतनी खोज कर रहे हैं।'' सब के इस रूप में कहने पर ब्रह्म ने यह कहा। ''वह अब किसी के हाथों में नहीं मरेगा। समय आने पर मनुष्य के हाथों में ही वह मरेगा। देवतादि से नहीं मरने के वर उसे प्राप्त हैं। इस के लिए उस ने बडा घोर तप किया था। अब उसे कोई हरा नहीं सकता है। फिर भी मैं एक उपाय आप को बताऊँगा। अब आप को श्री वेंकटाद्री पर बसे श्रीहरि की शरण में ही जाना चाहिए। वे आप की पीडा को समझ कर रावण को मारने के लिए मानव रूप धारण करके उसे मार कर आप की रक्षा करेंगे। आप चिंता छोड दीजिए। श्री वेंकटाद्री पर आप के साथ मैं भी आऊँगा। आप और मैं पृथ्वी की परिक्रमा करके पद्माक्ष के रहनेवाले स्थान की खोज करके श्रीहरि को प्रणाम करके अपने कार्य पूरा करेंगे। श्रीहरि अपनी देवी के साथ मिलकर अपनी माया से खग-मृगादि के साथ मिल कर क्रीडा करते होंगे। इसलिए यहाँ कहीं श्रीहरि दिखाई नहीं पडेंगे। फिर एक और विशेष है। वह यह है कि दशरथ नामक सूर्यवंशी राजा संतान के लिए पुष्करिणी के तट पर तप कर रहा है। अब श्रीहरि उसे दर्शन देंगे। तब हम को उस पर्वत पर ही प्रतीक्षा करनी होगी। वहाँ उस राजा को दर्शन देनेवाले श्रीहरि से हमें अपनी विनतियाँ सुनानी चाहिए।'' यह रहस्य व उपाय देवताओं को बता कर तदूपरांत ब्रह्म उन के साथ श्री वेंकटाद्री के उत्तर भाग से श्रीहरि की खोज करते गिरि की परिक्रमा करने लगे।

गिरि अत्यंत सुंदर और अत्यंत व्यापक है। गिरि मंदार, चंपक, वकुल आदि फूलों के पौधों-लताओं से परिवेष्ठित, चारों दिशाओं में पुष्पों की सुगंध फैल रही है, फलों के वृक्ष भी भरे पडे हैं, शुक, पीक आदि प्रमुख पक्षीगण विनोद के साथ उत्साह से कूजित करते, गंडबेरुंड, कंठीरव आदि के कलरव ध्वनि आकाश को पहुँच रही थी, गरुड, गंधर्व, यक्ष, किन्नेर आदि वहाँ घूम घाम रहे थे, नदियों और सरोवरों से भी वह गिरि भरी हुई थी।

क्रमशः

लोपामुद्रा

-डॉ.के.एम.भवानी, मोबाइल-9949380246.

‘‘**ला**पामुर्द्रार्चिता लीला क्लुप्ता ब्रह्माण्ड मंडला ललिता सहस्रनामों’’ में रहा- इस नाम का अर्थ है कि लोपामुद्रा से पूजित की जानेवाली माता। इससे मालूम होता है कि लोपामुद्रा माता ललिता की परम भक्तिन है। भगवान हयग्रीव के द्वारा ऋषि अगस्त्य को बताया गया ‘ललिता सहस्रनामों’ में लोपामुद्रा का नाम उल्लेखित करना लोपामुद्रा का परम सौभाग्य है। पुराणों के अनुसार ललिता माता की उपासना करके माता का प्रत्यक्ष दर्शन करने वाले प्रसिद्ध भक्त बारह हैं। उनमें ग्यारह पुरुष भक्त हैं तो सिर्फ़ ‘लोपामुद्रा’ नारी है।

लोपामुद्रा ऋषि अगस्त्य की पत्नी है। लोपामुद्रा का अर्थ है कि जिसमें कोई लोप(दोष) न हो। हमारे पुराणों के अनुसार लोपामुद्रा एक अत्यंत सशक्त महिला रत्न है। कहा जाता है कि ऋग्वेद में भी लोपामुद्रा का वर्णन है।

एक कथन के अनुसार विदर्भ के राजा संतान प्राप्ति के लिए ऋषि अगस्त्य से प्रार्थना की। उसके वरदान से ही राजा को संतान प्राप्ति हुई। पुत्री को पाया राजा ने उसे लोपामुद्रा का नाम रखकर बड़े लाड-प्यार से उसका पालन-पोषण किया। जब अगस्त्य ऋषि शादी करने की बात सोचता है, तब उसे लगता है कि लोपामुद्रा ही उसके लायक कन्या है। इसलिए वह विदर्भ राजा के पास जाकर लोपामुद्रा का हाथ माँगता है तो राजा सोच में डूब जाते है कि राजमहल में पली सुंदर और सुकुमारी कन्या ऋषि के साथ आश्रम में कैसे रह सकती है? लेकिन वह ऋषि से न भी न कह सकता था। तब लोपामुद्रा खुद पिताजी के पास जाकर उन्हें समझाती है कि ऋषि अगस्त्य के साथ शादी करने के लिए वह तैयार है। तब राजा भी राजी होकर उन दोनों की शादी करा देता है। शादी के बाद लोपामुद्रा अपने सारे राजसी चिह्न, ठाठ-बाट छोड़कर आश्रम वास के लायक वस्त्र धारण करके ऋषि की अनुगामिनी बनती है।

आश्रम में पहुँचने के बाद लोपामुद्रा तन मन से पति की सेवा में लीन हो जाती है। ऐसे कई साल बीत जाते हैं। एक दिन ऋषि अगस्त्य को लगता है कि वह पत्नी के प्रति अपनी जिम्मेदारी को नहीं निभा पा रहा है। इसलिए वह उसे अपने पास बुलाकर कहता है कि वह पत्नी को पुत्रवती होने का सौभाग्य देना चाहता है तब लोपामुद्रा देवी उससे कहती है कि वह आश्रम वेशधारी बनकर हीं, राजसी ठाठ-बाट से पति से समागम करना चाह रही है। क्योंकि अगर अच्छी संतान को पाना है तो ऐसे माहौल भी चाहिए। वह पूरी राजसी वेश-भूषा से अलंकृत होकर समागम लायक वातावरण में पति से मिलना चाहती है। पत्नी की इच्छा को सुनकर ऋषि कुछ न कह सका। लेकिन वह धन प्राप्ति के लिए अपना तपोबल खर्च करना नहीं चाहता था। इसलिए वह किसी से माँगकर धर्म बद्ध रीति से धन प्राप्त करना चाहता है। एक परिशीलन के अनुसार लोपामुद्रा ही शायद ऐसी पहली महिला थी जो अपने पुत्र प्राप्ति के लिए पति को ऐसी विचित्र शर्त रखी। बेझिजक समागम के बारे में पति से खुल कर अपने मन की बात व्यक्त कर सकी।

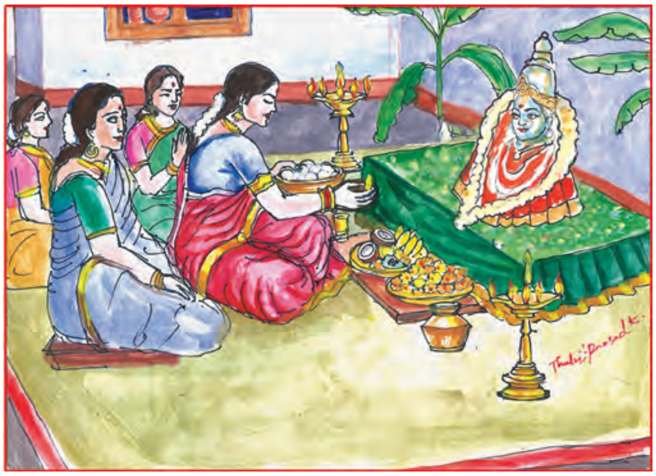

ऋषि धन प्राप्ति की कोशिश में महाबलशाली और दुष्ट वातापि नामक राक्षस को भोजन के रूप में स्वीकार कर उसको हजम कर लेता है और बहुत सारे ब्राह्मणों को मारा वातापि की पीड़ा को दूर कर लोगों को सुख पहुँचाता है और उसके भाई इल्वल के पास रहा बहुत सारा धन ले आकर पत्नी लोपामुद्रा की चाह को पूरी करता है। उस समय ऋषि अपनी पत्नी से यह पूछता है कि उसे दस लोगों के समान सौ पुत्र चाहिए या सौ पुत्रों के समान हजार पुत्र चाहिए या हजार पुत्रों के समान एक पुत्र चाहिए? होशियार लोपामुद्रा हजार पुत्रों के समान एक पुत्र को देने की माँग करती है। वह पुत्र ही दृढ़स्य है, जो बड़े होकर प्रसिद्ध कवि के रूप में विख्यात हुए।

लोपामुद्रा की कहानी यह साबित करती है कि कारणजन्म लोग जो भी कार्य करते हैं उससे हमेशा उनका अपना नहीं, बल्कि लोक कल्याण ही होता है। लोपामुद्रा की विचित्र इच्छा एक लोक कंटक राक्षस से दुनिया को मुक्ति दिला दी।

सर्वेजना सुखिनो भवन्तु।

श्री कोदंडरामस्वामीजी का मंदिर, तिरुपति।

ब्रह्मोत्सव

(दि. 20-03-2023, सोमवार से दि. 28-03-2023, मंगलवार तक)

दिनांक	वार	दिन	रात
20-03-2023	सोम	ध्वजारोहण	महाशेषवाहन
21-03-2023	मंगल	लघुशेषवाहन	हंसवाहन
22-03-2023	बुध	सिंहवाहन	मोतीवितानवाहन
23-03-2023	गुरु	कल्पवृक्षवाहन	सर्वभूपालवाहन
24-03-2023	शुक्र	पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव	गरुडवाहन
25-03-2023	शनि	हनुमन्त वाहन, सायं : वसंतोत्सव	गजवाहन
26-03-2023	रवि	सूर्यप्रभावाहन	चंद्रप्रभावाहन
27-03-2023	सोम	रथ-यात्रा	अश्ववाहन
28-03-2023	मंगल	पालकी उत्सव, तीर्थवारि अवभृथोत्सव, चक्रस्नान।	ध्वजावरोहण

महाविद्यालय की गोद में सुंदर मंदिर

तेलुगु मूल - श्री बी.वी.रमणा

अनुवादक - डॉ.एस.हरि
मोबाइल - 9398454168.

विद्यालय, देवालय के समान ही है। शिक्षा प्रदान करनेवाला 'विद्यालय' भगवान के मंदिर के समान होता है। तो फिर विद्यालय तथा देवालय दोनों प्रत्यक्ष रूप से एक ही स्थान पर स्थित विद्यालय ही 'श्री पद्मावती महिला महा विद्यालय (एस.पी.डब्ल्यू.सी)' है। तिरुमल तिरुपति देवस्थान के अधीन में लगभग सात दशाब्दियों के पहले स्थापित यह महिला विद्यालय कई छात्रों के लिए एक मणिदीप है। यह प्रसिद्ध महा विद्यालय तिरुपति क्षेत्र तथा ऐतिहासिक चंद्रगिरि किले के मार्ग पर श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय की दक्षिणी दिशा में थोडा सा अंदर रहता है।

एन.सी.सी.कार्यालय, थाना, श्री पद्मावती अतिथि गृह, ति.ति.दे. ई.ओ., जे.ई.ओ. बंग्ला इस कॉलेज को जानेवाले मार्ग के दोनों ओर दिखाई पड़ते हैं। महा विद्यालय के आगे सन् 1891 वर्षों की तिरुपति-पाकाला-काट्पाडी की रेल्वे लाइन वनिता विद्या सरस्वती की पवित्रता के लिए खींची गयी लक्ष्मण रेखा की तरह जाती हुई दिखाई देती है। अब कहना यह है कि श्री पद्मावती महिला महा विद्यालय के प्रांगण में अद्भुत प्राचीन आलयों का समुदाय आज भी अपनी वैभवता को विकीर्ण कर रहा है।

यहाँ चार मंदिर, दो जलाशय, एक कुआँ हैं। 19वीं. सदी के हाथीरांजी महंतों के समय के एक मंदिर के खंडहर के अलावा बाकी तीन मंदिर है, जलाशय विजयनगर राजाओं के शासन सौरभ के प्रतीक हैं। 16वीं. सदी के मध्यकाल के वास्तु-शिल्प, मूर्ति लक्षण के स्मृति चिह्न इस प्रांत के पुरातत्व इतिहास के साक्षी हैं। सन् 1952 ई. में श्री वेंकटेश्वर विद्यालय के नाम से प्रप्रथम बार महिला महा विद्यालय की स्थापना की जाने पर भी सन् 1956 ई. में अपना नाम बदल कर 'श्री पद्मावती महिला महा विद्यालय (एस.पी.डब्ल्यू.सी.)' के रूप में आविर्भाव हुआ। सन् 1963 ई. में निजी भवनों का निर्माण हुआ।

उन दिनों में इस प्रांत को 'महंत बाग' कहा करते थे। तिरुपति से इस बाग का रास्ता निकालकर, फिर यहाँ से चंद्रगिरि मार्ग से मिलने वाला रास्ता को 'रिंग्रोड' कहा जाता था। पहाड़ पर स्थित श्री वेंकटेश्वर स्वामी तिरुपति के लिए एक वरदान है। ति.ति.दे. का प्रबंधन तिरुमल एवं तिरुपति की जरूरतों की पूर्ति के लिए अक्षय पात्र से कोई कम नहीं है।

छाया-चित्र सौजन्य - श्री ट्रेकिंग बालु

श्री स्वामी के प्रति भक्ति से कई आचार्यों, सामंतों, दंडनाथों, देवदासियों ने यथाशक्ति भक्त यात्रियों के संक्षेमार्थ विविध-तरह के जनहित के पुण्यकार्य आरंभ किये थे। इससे उन्होंने तिरुपति क्षेत्र को नंदनवन बनाने की चेष्टा की है। इसी नेपथ्य में विजयनगर के सामंत चंद्रगिरि दुर्गाधिपति, देवत्व से संबंधित अन्य राज प्रतिनिधियों ने कई जनहित कार्यों में भाग लिये थे। मंदिर के गोपुर, मंडप, वापीकूप, तटाकों का निर्माण किया है। लगभग इनके शासन काल सन् 1530-1560 समय के बीच में तिरुमल, तिरुपति के आस-पास कई भव्य भवनों का निर्माण हुआ है। उनमें से प्रमुख हैं - प्रस्तुत श्री पद्मावती महिला महा विद्यालय में स्थित चतुर्भुज जलाशय, अन्य वैष्णवालय। 'चतुर्भुज जलाशय' एक दैविक ज्यामितीय (Sacred geometry), शिल्प कलाखंड, समुन्नत विजयनगर वास्तु परिणामशीलता का प्रमाण है। राजधानी हंपी में इस तरह की तकनीकी रूप में निर्मित जलाशय को देख सकते हैं। अपने महासाम्राज्य में एक छोटा-सा प्रांत तिरुपति में भी इस तरह के सर्वकालीन वैभवोपेत निर्माणों से यह समझा जा सकता है कि श्रीकृष्णदेवराय ने तिरुपति क्षेत्र को कितनी प्रधान्यता दी है?

प्रस्तुत ति.ति.दे. श्वेताभवन, श्री पद्मावती अतिथि गृहों के पास कई जलकुंड एवं जलाशय रहते थे। श्वेता भवन के पश्चिम की ओर हाथीरांजी मठ के अधिकारीगण, गुरुओं की समाधियों को अब भी देख सकते हैं। देवस्थान के आखिरी विचारणकर्ता महंत श्री प्रयागदास जी के समय में मुख्य अधिकारी राम लखन दास जी थे। इनकी समाधि भी इसमें पायी जाती है। सन् 1909 ई. में तिरुमल मंदिर के गर्भगुडि के ऊपर वाले आनंदनिलय विमान को सोने की पुताई करवाते समय राम लखन दासजी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

दक्षिण की ओर स्वर्णमुखी नदी में बहते पानी के बीच पाट पर महंतों का बाग पाया जाता था। जलस्रोतों

को दृष्टि में रखकर विजयनगर राजाओं ने छोटे-छोटे कस्बे जैसे वन प्रदेशों में मंदिर एवं गोपुरों का निर्माण करवाया है। खूब जलस्रोत पाये जाने के कारण इस निर्दिष्ट प्रदेश में विशाल 'चतुष्कोण जलाशय' का निर्माण हो पाया है।

तिरुवेंकटनाथ यादवरायलु ने सन् 1332 ई. में यह घोषणा की है कि 'तिरुपति' श्रीस्वामीजी का सर्वमान्य है। 16वीं शताब्दी के प्रथमार्थ में ही तिरुपति शहर का विस्तार चारों दिशाओं में हुआ हा। तिरुपति के निवासियों को मुख्य रूप से तीन वाटर्षेड का सहारा लिया जाता है। पहला कपिलतीर्थ वाटर्षेड (4.8. व. कि.मी.), दूसरा माल्वानिगुंडम वाटर्षेड (4.5. व. कि.मी.), तीसरा एस.वी. यूनिवर्सिटी वाटर्षेड (3.6. व. कि.मी.), एस.वी.विश्वविद्यालय का जलमंडल ही आज के एस.पी.डब्ल्यू.महा विद्यालय के आस-पास की सांस्कृतिक विविधता का जीवनाधार है। तिरुपति की पश्चिम की ओर में स्थित तिरुवेंकटापुरम् का स्थल ही आज के श्री पद्मावती महिला महा विद्यालय के खंडहरों का समूह है।

विजयनगर के सम्राट अच्युतदेवरायलु पृथ्वी साम्राज्य के शासन काल में चंद्रगिरि दुर्ग से संबंधित भूथनाथ भट्टरय्या शासन के में सन् 1530-1535 ई. के बीच चंद्रगिरि में श्री रघुनाथ आलय का निर्माण हुआ है। लगभग इसी समय में दूसरा रघुनाथस्वामी के देवालय का निर्माण तिरुपति के वेंकटापुरम् में हुआ है। श्रीस्वामीजी

का स्नपन तिरुमंजनम, प्लवोत्सव सेवाएँ मनाने के लिए बड़े जलाशय को खुदवाया गया है। तत्पश्चात् 'आरवीटि वंश' के शासनकाल में भी इस प्रांत का वैभव खूब बढ़ता गया। प्रस्तुत प्रधानालय, उपालयों की मूर्तियों एवं उत्सवमूर्तियों की चोरी हो गई थीं। आभूषण एवं आलय की अन्य सामग्री भी लूट लिए गये।

सन् 1613 ई. में विजयनगर के साम्राट दूसरा वेंकटपतिरायलू ने श्री वेंकटेश्वर स्वामी को, तिरुपति में नाच्चियार को - चंद्रगिरि, गोल्लपल्लि में कुछ खेतीबाडी की जमीन और बाग दान किये हैं। आज के श्री पद्मावती महा विद्यालय का प्रांगण गोल्लपल्लि बाकी परिसर प्रांतों की भूमि की सीमाओं में ही है।

भारत के प्रधानमंत्री लाल बहादुरशास्त्री से शुरुआत की गयी श्रीदेवी हॉस्टल के सामने स्थित प्रदेश में उप-आलयों से मिलकर कुल तीन मंदिर पाये जाते हैं। दाई ओर का मंदिर केवल अर्धमंडप, अतंरालय, गर्भगृहों से निर्मित हुआ है। ध्यान देने की बात है कि गर्भगृह के ऊपर का विमान अपनी प्राचीनता के लिए आज भी प्रसिद्ध है। सारे देवालयों की यह विशेषता है कि पूरब की दिशा में इनके मुखद्वार पाये जाते हैं। बाई ओर दिखाई देनेवाला पहले आलय को ति.ति.दे. ने फरवरी, 2005 ई. में पुनरुद्धार कर श्री पद्मावती

देवी माँ के आलय के रूप में पुनःस्थापित किया है। द्रविडागम रीति के अनुसार विमान का निर्माण कर माताजी की मूर्ति की स्थापना गर्भगृह में की गई है। वैखानस आगम रीति के अनुसार मूर्ति के पूजादि कार्यक्रम किए जाते हैं। द्वार के दह्लीज पर सर्वशुभ संपदा देनेवाली गजलक्ष्मी माता की मूर्ति बहुत ही रमणीय दिखाई देती है। गर्भालय द्वार बंधों को मध्ययुग के राजतंत्र के कला कौशल बनाया गया है। जो उस समय की शिल्पकला का प्रतीक है। जो अतिरिक्त सुंदरता का आधार है। बिना छत के विशाल मंदिर को प्रस्तुत महा विद्यालय की आवश्यकताओं के अनुसार उपयोग करते हैं। इस आलय समुदाय की नैऋति दिशा में सुंदर पत्थरों से निर्मित जलाशय बंद हो गया है। कहा जाता है कि 'सुप्रसिद्ध वाग्गेयकार' अन्नमय्या के पुत्र पेद्दतिरुमलय्या ने भी इस प्रांत में एक मंडप का निर्माण करवाया था।

पुराने आलय की आग्नेय दिशा में श्रीनिवास हास्टल के सामने तीन प्रधान द्वारों से युक्त नीचे उतरनेवाली सीढ़ियों से निर्मित चतुरस्राकार जलाशय बहुत ही सुंदर रूप से दिखाई देता है। पूरब, उत्तर, दक्षिण मार्गों में दिखाई देनेवाला तकनीकी दर्शकों को विस्मय करती है। ऊपर स्लाबों की तरह बिछाए पत्थरों की छत से अष्टभुजी ज्यामिती कोणों से युक्त कदम-कदम व्रत नियमों से लंबवत शिलास्तंभों के बीच में गोलाकार छोटे कुँए में प्रकाश-छायाओं से आँखमिचौनी खेलता हुआ आध्यात्मिक वातावरण को प्रतिबिंबित करता रहा है। यह एक भूगर्भ कला-खजाना है। देवताओं का दरबार है। हृदय को बहुत प्रसन्न करनेवाला स्वस्थ्य व पवित्र स्थल है। पृथ्वी के उदर का झूला है। झूले के बीच के जैसे स्थान पर खडे होने से बहनेवाली हवा के झोकों से युक्त लयात्मक की अनुभूति आज भी की जा सकती है।

देवता, पुराण, इतिहास, सामाजिक अंश, सांस्कृतिक गतिविधियाँ... आदि चार वर्गीय आधार स्तंभों पर सटीक बैठा हुआ सुंदर महा विद्यालय है। उस समय के महोन्नत विजयनगर के वास्तु-शिल्प वैभव की शैली लोकप्रिय बनाकर यात्रियों के मन को लूट लेती है।

कुल 28 खंभे हैं। उन स्तंभों पर लगभग 400 से अधिक शिल्प ऐसे दिखाई देते हैं जो लटके हुए चित्रों के समान है। इस प्रांत में कासिराई (ग्रैनट पत्थर) नाम से बुलाये जाने वाले ग्रानइट के कान्वास पर तरसे गये मत्स्य के चित्र, देवताओं की मूर्तियाँ, पुराण-पुरुषों, अवतारमूर्तियाँ, देवदासियों, नृत्य कारिणियों, वाद्यकार तथा आचार्यों के शिल्प दर्शकों को अभिभूत करते हैं। अपने घुटनों पर बैठा हुआ जैसी मुद्रा में दिखाई पडनेवाला गंभीर दिखाई देनेवाला श्रेष्ठ सिंह चिह्न लगभग सभी खंभों पर स्थित है। इसी तरह विभिन्न भंगिमा के नरसिंह, हनुमान जी के रूप मनभाते हैं। साधारणतया विजयनगर के निर्माणों में आलयवास्तु प्रमुख रूप से प्रतिबिंबित होता है। चारों ओर वैष्णव शिल्प व्याप्त है। सभी वैष्णव लीलाविभूति को विशद करने वाले शिल्प ही हैं। इससे यह पता चलता है कि तत्काल के निर्माण सारथी राजाओं पर तत्कालीन कुमार तातय्यंगार जैसे वैष्णव मताचार्य जी के गहरे प्रभाव का द्योतन प्रमाणित होता है।

स्थापत्यवेद से अभिहित किये जाने वाले वापीकूप तटाकों का निर्माण एक मुख्य विभाग है। निर्दिष्ट निर्माण करने से पहले भूमि की परीक्षा, दिक्साधना की जानी चाहिए। भूमापन भी किया जाना चाहिए। वास्तु पुरुष के आधार पर वास्तु मंडल को लिखवाना चाहिए। आलय निर्माणानुसार गर्भगृह के बीचों-बीच का स्थान ब्रह्मस्थान कहलाता है। (इसी स्थान पर मूलमूर्ति की प्रतिष्ठापना की जाती है।) इस जलाशय ब्रह्मस्थान जैसे स्थान पर पाताल गंगा उभर कर दिखाई देनेवाली, उतरनेवाली सीढ़ियों युक्त एक छोटा-सा कुँआ खुदवाया गया है। अष्टदिक्पालकों के प्रतीक के रूप में अष्टभुजाओं की ज्यामितीयता को बहुत सुंदर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। अंततः चतुष्कोण जलाशय में अष्टकोण दृक्कोण दर्शन देते हैं। बीच के छोटे कुँए के पास ही पत्थर पर स्नपन तिरुमंजन के संदर्भ में उत्सवमूर्तियों को रखने का आस्थान-पीठ है। एक प्रकार से तिरुपति के आस-पास के प्रांतों में और कहीं भी इस तरह का दिव्य-भव्य जलाशय नहीं है। मात्र प्रतिष्ठात्मक एस.पी.डब्ल्यू. महा विद्यालय के लिए यह बड़ी विरासत संपदा है। इस जगन्मोहनाकार जलाशय की यह विशेषता है कि पानी पूरा हो जाने पर भी इसके सौंदर्यरस में कोई कमी नहीं दिखाई देती है। नवरसों का अभिनय करने वाले अनल्प स्तंभ शिल्पों का यह कलात्मक आँफी थियेटर-तिरुपति क्षेत्र के इतिहास को पूरे संसार उद्घोषित करता है।

मध्ययुगों में विजयनगर की राजधानी हंपी के चतुरस्र, दीर्घचतुरस्र, अष्टभुजी आकारों में जलाशय उल्लेखनीय हैं। किंतु ये सब अधिक-से-अधिक स्नान घर ही हैं। तिरुपति परिसरों में श्रीकालहस्ती, कार्वेटिनगर राजांतःपुरों से संबंधित जलाशय भी अच्छे वास्तुशिल्प से शोभायमान

दिखाई पडते हैं। राणियों के स्नानघर ही हैं। ये सब जलक्रीडा विनोद विहार के प्रांगण ही हैं। इनके विपरीत एस.पी.हब्ल्यू. महा विद्यालय में बने विलक्षण जलकुंड की यह विशेषता है कि दैविक कार्यों की आवश्यकताओं के अनुसार ही ये बनाये गये है। इस के नीचे उतरनेवाली सीढियों का कुँआ है। ये सब एक पराकाष्ठा है, तो हाथीरामजी महंतों के शासनकाल में निर्मित श्रीदेवी, भूदेवी समेत श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी का आलय एक और पराकष्ठा है।

सन् 1933 ई.वीं. तक नौ दशकों तक महंतों का शासन चला था। अपने समय में महंतों के मठ के लिए यह एक मुख्य केंद्र बिंदु था। महा विद्यालय के प्रांगण के प्रवेश कर मंदिर के बगल में चलते हुए थोडा आगे देखने पर पहले महंतों के शिथिलालय ही दिखाई देता है। पेडों की झाडियों के बीच मुकाबला करते हुए आलय की दीवारें दिखाई देती हैं।

विजयनगर की आलय शिल्प शैली से थोड़ा भिन्न होने पर भी देवालय के निर्माण वैष्णव आगम के अनुसार ही महा, मुख, अर्ध-मंडपों का निर्माण हुआ है। अंतरालय युक्त गर्भगृह पर उत्तर देशवासी अधिक उपयोग करनेवाली नागरशैली में विमानगोपुर का निर्माण किया गया है।

यह मंदिर भजन, पारायण, गोष्ठियों के निमित्त ऊँचे चबूतरे, विशाल सीढ़ियाँ को सुंदर आर्चियों की दीवारों के साथ निर्मित हैं। शिथिलावस्था में रहने पर भी इसकी सुंदरता में कोई कमी नहीं है। इस वैष्णवालय के आगे मूलमूर्ति के अभिमुख में सौंदर्यपूर्ण छोटे गरुड के मंदिर का निर्माण किया गया है। गरुड मंदिर के पीछे एक छोटा-सा सुंदर कुँआ बनाया हुआ है। जो तत्कालीन आवश्यकताओं की पूर्ति करता था। इस जलाशय से पानी की सिंचाई करने की सुविधा के लिए सिमेंट से बनायी गयी लंबी नहर आज भी सुरक्षित है।

महंतों के समय के एक मजबूत जंजीर आज भी कुँए में नाग सर्प की भाँति लटकी हुई है। श्रीदेवी, भूदेवी समेत श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामी के यादगार में तीन मूर्तियों के चिह्न 'विग्रहपीठ' पर दिखाई देते हैं। जब देवस्थान में महंतों का शासन था, तब महंत मंदिर के चारों ओर दशावतार मूर्तियों की स्थापना कर उपालयों का निर्माण करवाना चाहते थे। उसी के तहत दस अवतार मूर्तियों को भी तैयार करवाया था। किंतु सत्ता हाथ से छूट जाने से इस निर्णय को वापस लेकर सारी मूर्तियों को तिरुमल के हाथीरामजी मठ भेज दिया गया, ऐसी मान्यता है। आज भी इन मूर्तियों को मठ के रामालय प्रदक्षिण मार्ग के कमरों में क्रमानुसार देख सकते हैं।

इतने ऐतिहासिक महत्व को प्रामाणित करने वाला एवं मधुर स्मृतियों को याद दिलाने वाले यह आलय समूह, तिरुमल के श्री वेंकटेश्वर स्वामी के चरणों में स्थापित श्री पद्मावती महिला महा विद्यालय होना सिर्फ तिरुपतिवासियों के लिए ही नहीं बल्कि शिक्षा क्षेत्र के सभी का सौभाग्य ही मान लेना चाहिए। क्यों कि इतना भव्य परिसर, आध्यात्मिकता से भरपूर महाविद्यालय भारत में बहुत कम ही पाये जाते हैं। भौतिकवाद के सर्वेसर्वा प्रभाव के आज के संदर्भ तिरुपति में तिरुमल तिरुपति देवस्थान की देखरेख में बसा यह 'श्री पद्मावती महिला महाविद्यालय' अद्भुत एवं अनुपम आध्यात्मिक शिक्षा भी देनेवाली अद्वितीय शिक्षा-खान है।

(युवा)

पुरुष की परिपूर्णता का आधार स्त्री

- श्री वेमुनूरि राजमौलि, मोबाइल - 8985239313.

नारी निंदा न करो, नारी रतन की खान।
नारी से नर होता है धृव प्रह्लाद समान।।

स्त्री के बडप्पन की सराहना करते कबीर ने यह पद्य लिखा। ''स्त्री की निंदा करके अपमान नहीं करना चाहिए। वह अनमोल संपत्ति के समान है। ध्रुव, प्रह्लाद जैसे कई महानुभावों को महिला ने ही जन्म दिया। इसे पहचान लो''- ऐसा इसका अर्थ है। उत्कृष्ठ समाज की सृष्टि का मूल स्त्री मूर्ति ही है। ध्रुव ने श्रीमन्नारायण का साक्षात्कार पाकर ध्रुव-तारा के रूप में आकाश में बडा स्थान प्राप्त किया। इसका कारण उसकी माता सुनीति की प्रेरणा ही है। इसी तरह श्रीहरि की महिमा और उसके नामोच्चारण का प्रभाव जानकर प्रह्लाद ने नरसिंह का साक्षात्कार पा लिया। उसकी माँ लीलावती ने ही परोक्ष रूप से उसकी मदद की। ऐसा कबीर दास का अभिप्राय है। दस अध्यापकों की अपेक्षा एक आचार्य; सौ आचार्यों की अपेक्षा एक पिता; हजार पिताओं की अपेक्षा एक माता पूजनीय है। ऐसा मनुधर्मशास्त्र कहता है। इसीलिए ''मातृदेवोभव'' कहकर माता को प्रथम नमस्कार करने के पश्चात् ही ''पितृदेवोभव'' कहकर पिता को नमस्कार करना चाहिए। ऐसा तैत्तरीय उपनिषत् ने कहा।

माता, अकेली होने पर भी चिंता न करके अपनी सन्तान का पालन-पोषण करके उन्नत स्थान तक पहुँचाने की अनेकों कथाएँ, पुराणों, इतिहासों में मिलती हैं। वाल्मीकि के आश्रम में जुगल बच्चों को जन्म देनेवाली माता सीता ने अपने पुत्रों को शिक्षा के साथ-साथ श्रीराम के समतुल्य बल-पराक्रम सिखाया। वनवास के समय भीम से विवाह रचकर घटोत्कच को जन्म देने वाली हिडिंबि ने सबकुछ स्वयं होकर पालपोस कर अपने पुत्र को मंत्र-शक्तियाँ सिखाकर परमात्मा कृष्ण से श्लाघनीय बन गयी। बालक शिवाजी को घुट्टी में धैर्य घोल कर पिलाने वाली बड़ी मातृमूर्ति जिजिया बाई है। मत (धर्म), मत के लिए नहीं; मानवता को बढाने के लिए ही है; कहकर भुवनेश्वरी देवी ने नरेन्द्र को प्रथम शिक्षा दी।

स्त्री अपनी सन्तान की परवरिश ही नहीं करती बल्कि समयानुसार अपने पति को मन्त्रिणी के रूप में यथोचित सलाह मशवरा देकर सही रास्ते पर चलाती है; ऐसा भर्तृहरि ने कहा। ऐसे अनेकों उदाहरण हमें मिलते हैं। अपने पति बालचन्द्र को वीर तिलक लगाकर; खड्ग सौंप कर समरांगन में भेजनेवाली स्त्री मांचाला है। अपनी पत्नी रत्नावली पर अनुरक्त हो जोरों की वर्षा में उमड़ती बहनेवाली नदियों को परवाह न करके पार कर आधी रात को ससुराल पहुँचने वाले पति तुलसी दास से उसकी पत्नी ने कहा- हाँड-माँस से बने इस शरीर पर मोह छोड़कर श्रीराम चन्द्र पर प्रेम दिखाये तो जीवन धन्य बनता है न? उसकी बातें सुनकर बिना कुछ कहे काशी जाकर गोस्वामी तुलसी दास में बदल कर वाल्मीकि रामायण को ''रामचरितमानस'' के नाम से लिखा। पुरुष की परिपूर्णता का आधार स्त्री ही है। ऐसे अनेकों दृष्टांत इतिहास में हमें देखने को मिलते हैं। स्त्री को दुःख न पहुँचाने का कर्तव्य पुरुष का है तो आप खुश रहकर सबको खुश बनाये रखने की जिम्मेदारी स्त्री पर है; ऐसा सबको सोचना चाहिए। युवती-युवक एक दूसरों को आदर देकर समतुल्य समाज स्थापना में दोनों कंधों पर समान जिम्मेदारी है।

श्री प्रपन्नामृतम्

(40वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - 9900926773

(गतांक से)

धनुर्धरदास पर यतिराज की कृपा

भगवान श्रीरंगनाथ के कैंकर्य को सदैव करने वाले यतिराज श्री रामानुजाचार्य के शिष्य समुदाय की संख्या प्रतिदिन बढ़ने लगी। अनेकों विशिष्ट एवं सामान्य सभी जन आपके आश्रित होकर दोनों विभूतियों के लिये निर्भय हो गये।

उस समय में निचुलापुरी में धनुर्धरदास नामक एक पहलवान रहता था। जिसकी शारीरिक क्षमता की सर्वत्र प्रशंसा की जाती थी। वह चाणूर के समान बलशाली और विशाल सुदृढ़ शरीर वाला था। जिसने अनेकों पहलवानों को पछाड़कर मल्लविद्या में अपना अद्वितीय स्थान बना लिया था। यह धनुर्धरदास मल्ल हेमाम्बा नामक एक युवती के प्रेम में आसक्त होकर नित्यप्रति उसके कमल के समान विशाल सुन्दर नेत्रों की ओर निहारने में ही मग्न रहता था।

चैत्र मास में श्रीरंगनाथ भगवान का ब्रह्मोत्सव होते हैं। जिन में दूर-दूर से हजारों भक्त श्रीरंगधाम में भगवद्दर्शनों का अलभ्य लाभ उठाने के लिए आते हैं। एक बार यह उत्सव देखने के लिए धनुर्धरदास की प्रेयसी हेमाम्बादेवी ने भी अपनी इच्छा प्रकट की और श्रीरंगम के लिये चल पड़ी। धनुर्धरदास भी हेमाम्बा में अत्यधिक आसक्त होने के कारण उसका मुख देखने के लिए उसके पीछे-पीछे चल पड़ा और श्रीरंगम पहुँच गया। यहाँ के लोगों ने देखा कि एक विशालकाय पुरुष एक सुन्दरी युवती के आगे-आगे उस पर छाता पकडकर उसके सुन्दर मुख की धूप से रक्षा करते हुए स्वयं उल्टे पाँवों से निरन्तर उसके मुख की ओर देखते हुए चल रहा है। इस एकाग्रता के कारण कभी-कभी मार्ग में उसको ठोकर भी लग जाता था। फिर भी वह उसी कार्य में चित्त था। इस विचित्र दृश्य को देखने के लिये मार्ग के दोनों तरफ बहुत से लोग एकत्रित हो गये। मध्याह्न कृत्य सम्पन्न करके यतिराज श्री रामानुजाचार्य भी जब कावेरी के शिष्यगणों के साथ लौट रहे थे, तब उन्होंने भी यह विचित्र दृश्य देखा और शिष्यों को दिखाते हुए बोले- ''भगवान की माया से मोहित विषयों में आसक्त, स्त्री पराजित इस मनुष्य की कैसी दयनीय स्थिति है, जो

जन समुदाय के सामने ही किस प्रकार निर्लज्ञता के साथ स्त्री-सेवा में लगा हुआ है। यद्यपि विषयों में आसक्त कोई कामी जन स्त्रियों के प्रति एकान्त में ऐसा सेवामय व्यवहार करते हैं। लेकिन इसने तो सभी सीमाओं का ही उल्लंघन कर दिया है। काम सागर में डूबे हुए इस लज्ञाहीन, मूढ़ हृदय वाले व्यक्ति को हम अवश्य श्रीरंगनाथ भगवान के सन्मुख करेंगे।'' यह कहकर यतिराज ने अपने विश्वस्त शिष्यों को भेजकर धनुर्धरदास पहलवान को अपने मठ में बुलाया।

यतिराज ने मल्ल के विशालकाय वपु को नीचे से ऊपर तक देखा और फिर उसका परिचय पूछा, यतिराज के पूछने पर हाथ जोड़कर वह बोला- ''महाराज! मैं निचुलापुरी निवासी धनुर्धरदास मल्ल हूँ एवं पहलवानी करके जीविका निर्वाह करता हूँ। वर्तमान में इस कला में सर्वत्र मेरी प्रसिद्धि है जिसके कारण समस्त पहलवान मेरा नेतृत्व मानते हैं। भगवान श्रीरंगनाथ का ब्रह्मोत्सव देखने के लिये मैं अपनी प्रिया हेमाम्बा के साथ जिस प्रकार अन्य हजारों लोग आये हैं, वैसे ही आया हूँ।'' यह सुनकर श्री रामानुज स्वामीजी बोले- ''मेरा एक और प्रश्न है। बुरा मत मानना? यह है कि भगवान के महोत्सव के समय सब लोगों के समक्ष तुम्हारे जैसे बलवान पुरुष के लिये एक स्त्री के ऊपर इस प्रकार से निर्लज्ञतापूर्वक छाता लगाकर उलटे पैर

चलना कहाँ तक शोभास्पद है। एकान्त में तो प्रायः कामीजन स्त्री की दासता स्वीकार करते हैं। लेकिन इस प्रकार सार्वजनिक स्थानों पर लोगों में अपने जीवन में स्त्री की सेवा में रत मनुष्य तुम्हें ही देखा है। इसका क्या कारण है, यह मैं जानना चाहता हूँ।'' इन वचनों को सुनकर लज्जित होकर विनम्र शब्दों में हाथ जोड़कर वह बोला- ''महाराज! मैं कामातुर नहीं हूँ और न वेश्याओं के लिये ही लोलुप हूँ। लेकिन सौन्दर्य-प्रेमी अवश्य हूँ। यह हेमाम्बा नामक विशाल नेत्रों वाली युवती बहुत सुन्दर है और इसके कमल नयनों में एक बहुत ही अपूर्व मादक सौन्दर्यरस भरा हुआ है। अतः हे स्वामिन्! इन सुन्दर नेत्रों में मेरा मन सदैव निमग्न है। इसलिए मैं निरन्तर इन नेत्रों को सुरक्षित रखने के प्रयत्न में लगा रहता हूँ। आज धूप बहुत तेज पड़ रही है। ऐसे समय में इस सुन्दरी के कमल नयनों की धूप से रक्षा के लिये छाता लगाकर चलना और निरन्तर इन नेत्रों का सौन्दर्य पान करते रहना मुझे प्रिय है। इसके अतिरिक्त मुझमें अन्य कोई दुर्व्यसन या वासना नहीं है।'' धनुर्धरदास के विनययुक्त वचनों को सुनकर यतिराज ने मुस्कराते हुए उनको

अपना अनुरागी भक्त बनाने की कामना से कहा कि- ''हे वत्स! तुम्हारे इन आराध्य नेत्रों से भी सुन्दर और विशाल नेत्र भगवान श्रीरंगनाथ के हैं। जो मैं तुम्हें अवश्य ही दिखलाऊँगा?'' यह सुनते ही धनुर्धरदास ने कहा कि- ''यदि हेमाम्बा के विशाल एवं सुन्दर नेत्रों से भी उत्तम नेत्रों का मुझे दर्शन हो जाय तो मैं उन नेत्रों का परम भक्त बन जाऊँगा।'' बस यतिराज तत्काल ही उसको साथ लेकर भगवान के मन्दिर में गये, जहाँ कि देवाधिदेव भगवान श्रीरंगनाथजी, संसार के कल्याण के लिए शेषशय्या पर शयन कर-भक्तों को दर्शन दे रहे थे। यतिराज ने रघु वंशियों के भाग्य से भूतल पर अवतरित शेषशायी, आदिपुरुष श्रीरंगनाथ भगवान के समीप में ले जाकर इस मल्ल श्रेष्ठ धनुर्धरदास को भगवान के दर्शन कराये। यतिराज की प्रार्थना के प्रभाव से भगवान के नेत्र अत्यन्त दिव्य हो गये और धनुर्धरदास ने देखा कि विशाल कमलदल के समान नेत्र, कोमल कपोल, स्मित हास्यमय रक्तिम अधर आदि अपूर्व कान्ति से दैदीप्यमान, लावण्य सुन्दर भगवान का श्रीविग्रह है। जो बहुमूल्य स्वर्णिम कोशेय वस्त्रों एवं रत्नजटित आभूषणों से अत्यन्त शोभायमान हो रहा है। ऐसे सौन्दर्य सागर भगवान की ओर एक टक देखते हुए धनुर्धरदास को देखकर यतिराज बोले- ''यही लक्ष्मीपति भगवान श्रीरंगनाथ हैं जो समस्त जगत के स्वामी हैं।''

भगवान के दिव्य श्रीविग्रह का दर्शन कर धनुर्धरदास उनकी निर्हेतुक कृपा से भगवान के नेत्रों पर स्थिर चित्त हो गया।

यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने बिना किसी स्वार्थ के अपनी परम दया से पहलवान धनुर्धरदास को प्रेमपूर्वक उपाय के साथ भगवान के समक्ष लाकर उनके सुन्दर नेत्रों के दर्शनों से भगवद्भक्त बनाकर सन्तोष के साथ अपने मठ में आ गये।

यतिराज के सम्बन्ध से भगवान ने धनुर्धरदास पर पूर्ण कृपा की। जिससे वह काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, मात्सर्य आदि दुर्गुणों से मुक्त होकर भक्त बन गया और आहार, निद्रा आदि पर विजय प्राप्त करके श्रीरंगनाथ भगवान को एक टक बिना पलक झुकाये दर्शन करने के कारण देवताओं के समान दिखलाई पड़ने लगा।

इसके बाद यतिराज ने उसको अपने मठ में लाकर तीर्थ-प्रसाद दिया और फिर पंचसंस्कार करके श्रीवैष्णव बना लिया। यतिराज का शिष्य बनने के बाद वह प्रतिदिन उनकी सेवा में संलग्न हो गया। यह समाचार जब साध्वी हेमाम्बा ने सुना तो वह भी यतिराज की शरण में आई और फिर उनसे पंचसंस्कार प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करने लगी। उसकी प्रार्थना को स्वीकार कर आपने उसको भी शरणागति धर्म में दीक्षित कर लिया और धनुर्धरदास के साथ यथापूर्वक मिला दिया। फिर भगवान की शरणागति से इस दम्पती की बुद्धि अत्यन्त निर्मल हो गयी और धनुर्धरदास से भी अधिक साध्वी हेमाम्बा देवी ज्ञान, वैराग्य, भक्ति और सदाचार आदि सद्गुणों में प्रतिदिन अधिक निमग्न रहने लगी। ये दोनों पति-पत्नी आदर सहित श्री रामानुजाचार्य के नित्य कैंकर्य में संलग्न रहते हुए उनके चरणकमलों के सेवारूपी रस का पान कर महान भगवद्भक्त बन गये।

इस प्रकार यतिराज श्री रामानुजाचार्य ने मिथ्या सांसारिक मोह में ग्रस्त दम्पती को अपने उपाय के द्वारा भगवत् भागवत आचार्य कैंकर्य में लगाकर अपनी अर्हेतुक कृपा के द्वारा महान भक्त बना दिया और उनको अपने अन्तरंग शिष्यों में प्रमुख स्थान प्रदान किया।

।। श्री प्रपन्नामृत का 40वाँ अध्याय पूर्ण हुआ।।

क्रमशः

तिरुमल श्री बालाजी का उगादि आस्थान महोत्सव
दि. 22-03-2023

श्रीरामचंद्रचरणौ शरणं प्रपद्ये

सभी सद्गुणों को अपने में समेटकर, अपने शील संपदा से सारे दुनिया के आदर्श पुरुष के रूप में खडे हुए श्रीरामचंद्रमूर्ति सकल लोक आराध्य हैं। प्रधान रूप से हर प्रांत के लोगों के आराध्य दैव श्रीरामचंद्रमूर्ति है। इतना ही नहीं श्रीराम का राज्य अयोध्या होने पर भी तेलुगु मिट्टी के अनेक प्रांत उनके चरण धूलि से पुनीत हुआ कहा जाता है। श्रीराम के वनवास के समय, सीतन्वेषणा के समय, रावण का वध करने के बाद वापस अयोध्या जाते समय यहाँ बीतने के बारे में बताने वाले पुण्य क्षेत्र इस मिट्टी में हैं। ऐसे क्षेत्रों में ति.ति.दे. के आध्वर्य में रहे क्षेत्र प्रमुख है। श्रीरामनवमी के संदर्भ में उनका दर्शन करने से अनंत पुण्य फल की प्राप्ति होती है।

श्रीरामुलवारि मेडा, तिरुमल

कलियुग प्रत्यक्षदैव श्री वेंकटेश्वरस्वामी विराजमान सोने की ड्योडी, (बंगारु गडपा) आनंदनिलय मंदिर में गंटामंटप, स्नपन मंटप के बाद रहे मंटप ही ''रामुलवारि मेडा'' है। पहले श्रीसीताराम, लक्ष्मण मूर्तियों के उत्सवमूर्तियाँ इस मंटप में रहने के कारण इसको ''श्रीरामुलवारि मेडा'' नाम पडा है। कहा जाता है कि सीता देवी की खोज करते हुए श्रीराम, लक्ष्मणों ने वेंकटाद्रि का दर्शन करने के कारण श्री सीताराम, लक्ष्मण उत्सवमूर्तियों को मंदिर में रखा गया है। अब ये मूर्तियाँ मंदिर के गर्भालय में दर्शन देता है। कुछ दिनों के पहले इस मंटप में दोनों ओर रहे आंगनों पर श्रीराम के सेवा परिवार देवताओं जैसे अंगद, हनुमान, सुग्रीवों का, श्री वेंकटेश्वर स्वामी के परिवार देवताओं जैसे विष्वक्सेन, अनंत, गरुड उत्सवमूर्तियाँ विराजमान हैं। श्रीरामनवमी के दिन 'आस्थान' अगले दिन 'श्रीराम के पट्टाभिषेक' का निर्वहण करते हैं।

श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर, ओंटिमिट्टा

त्रेतायुग में दंडकारण्य के रूप में प्रसिद्ध हुए इस प्रांत में कई महर्षियों ने तप करते रहे। इनके यज्ञों और तपस्याओं को राक्षसों ने कई रुकावट देते रहे। महर्षियों ने श्रीराम से प्रार्थना की। श्रीराम महर्षियों की प्रार्थनाओं को सुनकर कोदंड को धारण करके यहाँ पहुँचकर मुनियों की रक्षा की। इसलिए यहाँ के स्वामी को श्री कोदंडराम स्वामी नाम पडा है। श्री सीता, लक्ष्मण, श्रीराम ने महर्षियों की इच्छा पर अपनी प्रतिमाओं को उनको दिया है। इन प्रतिमाओं की नित्य पूजा करते हुए है। इसके बाद एक दिन जांबवान ने इस प्रांत में पहुँचकर रात होने के कारण वहीं आराम लिया। स्थल पुराण के द्वारा विदित होता है कि- उस दिन रात उनके स्वप्न में श्रीराम साक्षात्कार होकर वे विग्रह रूप में उसी प्रांत में रहे हैं और उन विग्रहों की प्रतिष्ठा करने के लिए कहा है। अगले दिन जांबवान ने विग्रह खोजकर श्रीसीताराम, लक्ष्मण विग्रहों को बाहर निकालकर उनको प्रतिष्ठित किया है। एक ही शिला से बनाये गये श्रीसीताराम, लक्ष्मण मूर्तियाँ गर्भगुडी में विराजित हुए है। इसलिए इस क्षेत्र को 'एकशिला नगर' कहते है। इस मंदिर का दर्शन करने से सभी इच्छाएँ पूरी हो जाती है।

ति.ति.दे. स्थानीय श्रीराम मंदिरों की विशेषताएँ

श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर, तिरुपति

श्री वेंकटेश्वरस्वामी विराजमान तिरुमल चरणों के समीप रहे तिरुपति नगर में श्री कोदंडरामस्वामी विराजित होकर भक्तों को दर्शन देते हैं। श्रीराम ने लंका राज्य पर आक्रमण करके रावण का वध करके सीतादेवी के साथ अयोध्या के लिए निकल पडे। श्रीराम के साथ लक्ष्मण, हनुमान, सुग्रीव, जांबवान, अंगदों ने भी श्रीराम के साथ अयोध्या निकल पडे। कहा जाता है कि श्रीराम अपने बंधु-मित्रों के साथ अयोध्या जाते समय मार्ग मध्य तिरुपति में प्रस्तुत मंदिर रहे प्रांत में थोडे दिनों तक आराम के लिए रुके हैं। बाद में श्रीराम अयोध्या के लिए निकल पडे। इस बीच के समय में जांबवान ने यहाँ मंदिर का निर्माण करके उसमें देवतामूर्तियों का प्रतिष्ठापन किया है। तिरुपति के बीच में विशाल मंदिर के गर्भालय में श्रीरामचंद्रमूर्ति के हाथों में ''कोदंड'' शरों का धारण करके कोदंडराम के रूप में विराजमान होकर रहना, वास्तव से भिन्न श्रीराम के दाये ओर श्री सीतादेवी, बाये ओर श्री लक्ष्मणमूर्ति विराजमान हैं। गर्भालय में हनुमान नहीं होना विशेष है। यह भगवान जी को दर्शन करने से मन की सारी इच्छाओं की पूरी हो जाती है।

श्री पट्टाभिराम स्वामी मंदिर, वाल्मीकिपुरम्, वायल्पाडु

वाल्मीकिपुरम् के मंदिर में श्रीराम श्री पट्टाभिरामस्वामी के रूप में विराजमान होकर भक्तजनों की इच्छाओं को पूरा करने वाले देवता के रूप में प्रसिद्ध होकर पूजाएँ ले रहे हैं। पूर्व एक बार जांबवान अयोध्या पहुँचकर श्रीराम का दर्शन करके वापस आ रहा था। एक कथन इस प्रकार है कि- रास्ते के बीच में इस जगह को आने पर एक वल्मीक से रोशनी प्रकाशित हुई। इनको देखा तो श्रीरामचंद्र की मूर्तियाँ मिला है। इससे मंदिर का निर्माण करके स्वामी की मूर्ति को प्रतिष्ठित किया है। इस मंदिर में श्रीराम सीतादेवी के साथ अपने सभी भाइयों के साथ दर्शन दिया है। स्वामीजी के दाये हाथ में ग्रासमुद्रा, बाये हाथ में वरदहस्त धारण करके विराजमान हैं। श्रीराम के दाये ओर श्री सीतादेवी, माता के दाये ओर भरत छामर का धारण करके विराजमान है। श्रीराम के बाये ओर धनुर्भाणों का धारण करके श्री लक्ष्मणमूर्ति, लक्ष्मण के बाये ओर शत्रुघ्न छामरों का धारण करके विराजमान है। यहाँ हनुमानजी प्रदक्षिणामंटप में रहना एक विशेष है। इस मंदिर का दर्शन करने से सही इच्छाएँ पूरा हो जाती है।

श्री कोदंडरामस्वामी मंदिर, चंद्रगिरि

चंद्रगिरि के मंदिर में श्रीराम श्री कोदंडरामस्वामी के रूप में विराजमान होकर दर्शन करते ही परिवार के लोगों के बीच अन्योन्यता जगाने के देवता के रूप में पूजाएँ ले रहे हैं। चंद्रगिरि विजयनगर पालकों के स्वाधीन में रहा था। हमेशा विजयनगर के चक्रवर्तियों ने इस किले में आते थे। वे वहीं से तिरुमल जाकर स्वामी का दर्शन करते रहे थे। विजयनगर चक्रवर्तियों के स्थानिक अधिकारी १६वीं शती में एक दिन थककर किले के समीप आराम लेते समय सपने में स्वामी साक्षात्कार होकर अपनी पहचान के बारे में कहने पर वे स्वामी को खोजकर, पहचानकर मंदिर का निर्माण करके प्रतिष्ठित किया है। मंदिर के प्रधान गर्भालय में श्रीराम श्री सीतादेवी के साथ अपने भाइयों के साथ मिलकर दर्शन देना विशेष है। एक ही पीठ पर श्री सीतादेवी, श्रीरामचंद्रमूर्ति, श्री लक्ष्मण मूर्ति, भरत, शत्रुघ्न विराजमान होकर रहे तो दोनों ओर श्री हनुमान, श्री गरुत्मंत विराजमान हैं। ये सब एक ही पीठ पर रहना विशेष है। इस स्वामीजी का दर्शन करने से परिवार के लोगों के बीच अनुराग वृद्धि हो जाती है।

तेलुगु मूल - डॉ.आई.एल.एन. चंद्रशेखर राव   अनुवादक - श्री पी.श्रीनिवासुलु

दि. 28-01-2023 को 'रथसप्तमी' उत्सव के अवसर पर आं.प्र., सी.एस. डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस., धर्मपत्नी सहित सूर्यप्रभावाहन सेवा में भाग लिया है। और इसी दिन कल्पवृक्षवाहन सेवा में भाग लेते हुए ति.ति.दे. जे.ई.ओ.(एच.& ई.) श्रीमती सदाभार्गवी, आई.ए.एस., सी.ई.ओ. श्री शेष शैलेंद्र, आई.आर.एस., ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष जी के धर्मपत्नी वाई. स्वर्णलता और अन्य अधिकारीगण भी भाग लिया है।

दि. 28-01-2023 को 'रथसप्तमी' के संदर्भ में तिरुचानूर श्री पद्मावती देवी सूर्यप्रभावाहनारूढ़ होकर भक्तों को दर्शन दिया है।

दि. 25-01-2023 को ति.ति.दे. बर्ड आस्पताल में अत्याधुनिक नूतन रक्त परीक्षा केंद्र को प्रारंभित करते हुए ति.ति.दे. ई.ओ. श्री ए.वी.धमरिड्डी, आई.डी.ई.एस.। इस कार्यक्रम में ति.ति.दे. जे.ई.ओ. (एच. & ई.) श्रीमती सदाभार्गवी, आई.ए.एस., बर्ड आस्पताल के विशेषाधिकारी डॉ.रेड्डप्पा रेड्डी, श्री पद्मावती बाल बच्चों का हृदयालय आस्पताल के निर्देशक डॉ.श्रीनाथ रेड्डी और अन्य अधिकारियों के साथ अन्य डॉक्टर भी भाग लिया है।

दि. 26-01-2023 को ति.ति.दे. प्रशासनिक भवन प्रांगण में स्थित पेरेड ग्रौंड में भारत गणतंत्र दिवस के कार्यक्रम में झंडा को फेहराते हुए ति.ति.दे. ई.ओ. श्री ए.वी.धर्मरिड्डी, आई.डी.ई.एस.। इस संदर्भ में जे.ई.ओ. (एच. & ई.) श्रीमती सदाभार्गवी, आई.ए.एस., तिरुपति जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., सी.वी. & एस.वो. श्री नरसिंह किशोर, आई.पी.एस., अतिरिक्त सी.वी. & एस.वो. श्री शिव कुमार रेड्डी और ति.ति.दे. अन्य उच्च पदाधिकारीगण ने भाग लिया है।

दि. 31-01-2023 को विशाखपट्टणम् में स्थित विशाखा शारदा पीठम् में ति.ति.दे. द्वारा आयोजित 'चतुर्वेदहवन पूर्णाहुति' कार्यक्रम में विशाखा शारदा पीठाधिपति श्रीश्रीश्री स्वरूपानंदेंद्र सरस्वती महास्वामीजी, उत्तराधिकारी श्रीश्रीश्री स्वात्मानंदेंद्र सरस्वती स्वामीजी, ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी जी और अन्य अधिकारीगण इस कार्यक्रम में भाग लिया है।

दि. 21-01-2023 को तिरुमल नारायणगिरि उद्यानवनों में श्री पुरंदरदास आराधन महोत्सव कार्यक्रम को संपन्न किया गया है। इस संदर्भ में कर्नाटक मुलबागल् श्रीपादराज मठाधिपति श्री सुजयनिधि तीर्थस्वामीजी, ति.ति.दे. जे.ई.ओ. (एच. & ई.) श्रीमती सदाभार्गवी, आई.ए.एस., दास साहित्य प्राज्येक्ट एस.ओ. श्री आनंदतीर्थाचार्युलु और अन्य अधिकारीगण ने भाग लिया है।

दि. 27-01-2023 को ति.ति.देवस्थान संबंधित मुबाइल यॉप को प्रारंभित करते हुए ति.ति.दे. न्यास-मंडली के अध्यक्ष श्री वाई.वी.सुब्बारेड्डी और ई.ओ. श्री ए.वी.धमरिड्डी, आई.डी.ई.एस., इस संदर्भ में तिरुपति जे.ई.ओ. श्री वी.वीरब्रह्मम्, आई.ए.एस., ने भाग लिया है।

सुदर्शन चक्र

भगवान श्रीमन्नारायण के पांच आयुध हैं वे-

1. चक्र, 2. शंख, 3. गदा, 4. खड्ग और 5. धनुष।

1. चक्र - सुदर्शन चक्र।

2. शंख - पांचजन्य शंख।

3. गदा - कौमुदकी गदा।

4. खड्ग - नन्दकी खड्ग।

5. धनुष - सारंग धनुष।

भगवान श्रीमन्नारायण के हाथ में सुशोभित अस्त्र 'चक्र'-सुदर्शन याने 'सु-दर्शन', 'दिव्य सुन्दर दर्शन'। उत्तर भारत में चक्रराज भी कहते है। इन्हें दक्षिण में चक्रत्ताल्वार नाम से पूजते हैं। चक्र और क्रतु दो शब्द मीलकर चक्रत नाम बना, आल्वार याने भगवद प्रेम, कैंकर्य में निमग्न, ऐसे चक्रत्ताल्वार नाम पडा। श्रीसम्प्रदाय में यह सिर्फ भगवान श्रीमन्नारायण का एक आयुध ही नही, इन्हें आयुध पुरुष मान इनको देवता के रूप में अलग से पूजा भी की जाती है। कुम्बकोणम में कावेरी नदी के चक्र घाट पर बने चक्रपाणी मंदिर में यह नारायण स्वरूप में विजयवल्ली तायार के साथ विराजित है। यहाँ यह बतलाते है, कि भगवान श्रीमन्नारायण ने स्वयं आयुध पुरुष के रूप में अवतार लिया है। यहाँ इन्हें 'चक्रपाणी पेरुमाल' कहते हैं। कुम्बकोणम के सारंगपाणी दिव्यदेश के पेरुमाल अरवमुदन और चक्रपाणी पेरुमाल को जुडवाँ मानते हैं, उत्सव में दोनों को एक साथ ही विराजमान कर उत्सव सम्पन्न करते हैं। पूरी जगन्नाथ जी के श्री मंदिर की चतुर्मूर्ति में एक सुदर्शन है, जो भगवान के साथ रत्नवेदी पर विराजते है। भगवान सुदर्शन जी के प्रमुख मंदिरों में :

- श्री श्याम सुंदर गिलडा,
मोबाइल - 9246348605.

1. तुरावुर, अल्लपुला, केरला में भगवान नृसिंह का मंदिर, इस मंदिर में दो गर्भगृह है, एक में भगवान नृसिंह और दूसरे में सुदर्शन भगवान है।

2. तीरुवल्ला का श्रीवल्लभ मंदिर यहाँ सुदर्शन जी भगवान श्रीवल्लभजी के साथ पूजित है।

3. मधुरै के पास दिव्यदेश कालमेघ पेरुमाल मंदिर।

4. सिंहाचलम में सुदर्शन भगवान षोडश हस्त से विराजमान है।

इनके गुणानुवाद में कूरनारायण जीयर स्वामीजी ने, सुदर्शन शतकम की रचना की। वेदांत देशिक स्वामीजी ने सुदर्शन अष्टकम और षोडश आयुध स्तोत्र की रचना की। लौकिक संसार में बाधायें, रुकावटें, रुग्णता के निवारण के लिये, सुदर्शन शतकम, अष्टकम के पाठ किये जाते हैं, शतकम से हवन भी संपन्न किये जाते हैं।

भगवान सुदर्शन त्रिनेत्र धारी हैं, इनके केश ज्वालयेन हैं। चक्रत्ताल्वार भगवान श्रीमन्नारायण के नित्य सूर की तरह ही सदा सेवा में तत्पर रहते हैं।

प्रमुख श्रीवैष्णव मन्दिरों में भगवान सुदर्शन के विग्रह की अलग से सन्निधी है, जिसमें चक्रराज विराजमान रहते है। दिव्यदेशों की चक्रराज सन्निधी में, भगवान सुदर्शन जी के पृष्ठ भाग में भगवान योग नृसिंह विराजमान रहते है।

भगवान सुदर्शन जी के दर्शन दो स्वरूपों में होते है।

1. अष्ट भुजा में और 2. षोडश भुजा में, पर अधीकतर अष्टभुजा ही दर्शन देते है। कुछ मन्दिरों में षोडश भुजा भी दर्शन देते हैं। भगवान सुदर्शन जी के 32 भुजा के दर्शन बहुत ही कम मन्दिरों में हैं, दुर्लभ भी है। भगवान सुदर्शन जी की दो पत्नीयाँ हैं।

1. सुदर्शनवल्ली तायर और 2. विजयवल्ली तायर।

सुदर्शन चक्र का उल्लेख ऋग्वेद में भगवान विष्णु के धारण किये आयुध के रूप में मिलता है। सुदर्शन चक्रराज का प्रयोग स्वयं भगवान श्रीहरि (श्रीमन्नारायण) और 8वें अवतार भगवान श्रीकृष्णजी ने किया है।

दास की जानकारी में यह है कि :

1. भगवान श्रीहरि ने गजेंद्र के उद्धार के लिये, मगर पर सुदर्शन चक्र का प्रयोग किया था।

2. महर्षि दुर्वास द्वारा राजा अम्बरीष (परम भागवत) का अपमान करने पर, सुदर्शन चक्र उनके प्राण लेने पहुँच गये, डर से भागते मुनि दुर्वासा को भगवान श्रीहरि ने, फिर से राजा अम्बरीष से क्षमा मांगने के लिये कह कर उनके पास भेजते है, और सुदर्शन चक्र फिर भगवान के पास पहुँच जाते हैं।

यह घटना यह बतलाती है कि परम भागवतों का अपमान अपचार, भगवान तो क्या उनके आयुध और नित्य सूर भी बर्दाश्त नही करते।

3. भगवान श्रीहरि दानव हयग्रीव का चक्रवन में संहार कर चक्र ले जाते है, ऐसा भी उल्लेख मिलता है।

4. सुदर्शन चक्र का प्रयोग भगवान विष्णु के 8वें अवतार भगवान कृष्णजी ने किया था।

5. ऐसा बतलाते है की भगवान कृष्णजी को सुदर्शन चक्र भगवान परशुरामजी ने प्रदान किया था, परशुरामजी को सुदर्शन चक्र वरुण देव प्रदान करते है, वरुणदेव को

अग्नि देव प्रदान करते है, अग्नि देव को यह चक्र स्वयं भगवान विष्णु प्रदान करते हैं।

6. भगवान कृष्ण को चक्र धारण और अनुसंधान का ज्ञान भगवान परशुरामजी देते है।

7. इतिहास, पुराण यह बतलाते है, कि दैत्य नरकासुर का वध, भगवान कृष्ण ने देवी सत्यभामा के साथ, चक्रराज का प्रयोग कर के ही किया था।

8. यह भी बतलाते है कि, सती के प्राण त्याग देने के बाद, भगवान शिव के क्रोध को शांत करने, भगवान विष्णुजी ने चक्रत्ताल्वार को आज्ञा देकर सती के पार्थिव शरीर को भागों में विभक्त करवाये थे। जो कालान्तर में वे शक्ति पीठ बने।

9. भगवान श्रीहरि ने मोहिनी अवतार में राहु के शीश को धड से अलग करने के लिए सुदर्शन चक्र का ही प्रयोग किया था।

10. समुद्र मंथन लीला में दिव्य मंदराचल पर्वत को भी भगवान श्रीहरि सुदर्शन चक्र से ही काट कर लाये थे।

11. यह भगवान का अचूक अस्त्र है, भगवान की सेवा में नित्य ही आह्वान करते ही उपस्थित रहते है।

सुदर्शन चक्र की विशेषताएँ कुछ ऐसी है :

1. सुदर्शन चक्र प्रत्यक्ष देखने में 108 नुकीले दांतों वाला अस्त्र है, पर संहार के समय उसमें असंख्य लाखों की गिनती में दांत आ जाते हैं।

सुदर्शन चक्रराज मन की गति से चलते है। कई जगह इनमें 27 दान्त भी कहा गया है, इन्हें प्रजापति की 27 कन्यायों के नाम दिये गये है। कुछ जगह 12 दांत बतलाये तो कुछ जगह 6 ही बतलाये गये हैं।

2. सुदर्शन चक्र का प्रयोग फेंक कर नहीं किया जाता बल्कि आत्मबल/इच्छा शक्ति से शत्रु पर साधा जाता है।

3. सुदर्शन चक्र राज एक बार ऊँगली से निकलने के बाद अपने लक्ष्य और कार्य को पूरा करके ही वापस आते हैं।

4. अपने लक्ष्य की ओर द्रुतगति से बढते श्री सुदर्शन चक्र से बचने का एक ही उपाय है, भागने की जगह शरणागति कर लेना, कहते हैं कि जो शरणागति कर लेता हैं, उसकी रक्षा स्वयं भगवान श्रीहरि आकर करते है।

5. श्री सुदर्शन चक्र को भगवान अपनी तर्जनी ऊँगली पर धारण करते है।

6. श्रीसम्प्रदाय में भगवान सुदर्शन आल्वार के विग्रह को षोडश हस्त वाला बतलाया है, इनके विग्रह के पृष्ठ भाग में योग मुद्रा में बैठे भगवान नृसिंह विराजमान रहते हैं।

7. सुदर्शन चक्र को श्री सम्प्रदाय में सुदर्शन आल्वार के स्वरूप में जानते हैं।

8. सुदर्शन चक्र का आकार बहुत छोटा है, पर लक्ष्य को भेदने में ये विशाल रूप ले लेते है। महाभारत युद्ध में इनकी विशालता भगवान भुवन भास्कर को ढक देने में दिखती है।

सुदर्शन चक्र के प्राकट्य के लिये अलग अलग मतों में अलग अलग कहानियाँ हैं।

1. ऋग्वेद में इसे काल चक्र के रूप में देखा गया और भगवान श्रीमन्नारायण को धारण किये हुये बतलाया है।

2. यह भी मान्यता है कि देवताओं के शिल्पी विश्वकर्मा जी ने, पुष्पक विमान, सुदर्शनचक्र और भगवान शिव के त्रिशूल का निर्माण एक साथ ही किया था।

कहा जाता है कि भगवान सूर्य के साथ विश्वकर्माजी ने अपनी पुत्री संजना को ब्याहा था, पर भगवान सूर्य के

तेज के कारण, उनकी पुत्री भगवान सूर्य के समीप नहीं जा पा रही थी, तब उन्होंने भगवान सूर्य के तेज से अपनी पुत्री को बचाने चक्रराज का निर्माण किया था।

भगवान कृष्ण ने चक्रराज का प्रयोग इन समयों पर किया था।

1. दैत्य नरकासुर के वध के समय।

2. सम्राट युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में शिशुपाल का वध करते समय।

3. महाभारत में जयद्रथ के वध के समय भगवान कृष्ण ने सूर्य के सामने, याने भगवान सूर्य को अपने सुदर्शन चक्र से ढक कर सूर्यास्त होने का अहसास करवाकर युद्ध को रोका था, जयद्रथ, अर्जुन के समक्ष आते ही सुदर्शन चक्रराज को वापस बुलवा लिया था।

4. महाभारत युद्ध के पहले, भीम के पौत्र बर्बरीक का शीश भी भगवान ने सुदर्शन चक्र से ही काटा था, बर्बरीक ही एक ऐसा योद्धा था जिसने सुदर्शन चक्र को अपने विशाल विकराल भयंकर रूप में, युद्ध में दोनों तरफ की सेनाओं का संहार करते देखा था।

5. एक कथा यह भी कहती है की गांधारी के श्राप के कारण या भगवान कृष्ण के अपनी लीला समेटने के उद्देश्य से स्वयं अपने पुत्र प्रद्‍युम्न (रुक्मिणि पुत्र) का शीश धड से अलग सुदर्शन चक्र से किया था।

भगवान कृष्ण द्वारा चक्रराज का यह आखरी प्रयोग था। भगवान सुदर्शन, इसे इस युग में अपना आखरी कार्य जान कर फिर भगवान में समाहित हो गये थे।

6. महाभारत युद्ध में गीतोपदेश के समय, समय (काल) को रोकने चक्रराज का प्रयोग हुआ।

7. पौंड्रिक कृष्ण के द्वारा चलित चक्र के प्रहार को रोकने और संहार के लिये, भगवान कृष्ण ने सुदर्शन चक्र का प्रयोग किया था।

8. ऐसे उल्लेख भी मिलते है कि, गोवर्धन धारण के समय भी सुदर्शन चक्र का प्रयोग किया गया था।

कुछ संदर्भों में भगवान कृष्ण ने सुदर्शन आल्वार का आह्वान किया फिर उन का प्रयोग नहीं किया।

1. रुक्मिणी हरण के समय भी पीछा करनेवाले रुक्मी को मारने भगवान ने सुदर्शन का आह्वान किया था, पर बलदाऊ और रुक्मिणीजी के कहने पर चक्रराज का प्रयोग नहीं किया।

2. पाण्डवदूत बनकर गये भगवान कृष्ण ने, दुर्योधन द्वारा बाँधेजाने के प्रयास करने पर, कौरव सभा में अपना विराट स्वरूप धारण किया, सुदर्शन का आह्वान भी किया पर उसका प्रयोग नहीं किया।

3. महाभारत युद्ध में भीष्म पितामह द्वारा भगवान का प्रण तुडवाने पर, भीष्म पितामह पर चक्र उठाया पर प्रयोग नहीं किया।

कहा जाता है कि भगवान श्रीहरि के हर अवतार में, नित्य सूर शेषजी और चक्रराज साथ रहते हैं।

ऐसा बहुत से आचार्य बतलाते है कि- मत्स्य अवतार में, मत्स्य के सींग के रूप में चक्रराज थे। कूर्म अवतार में दिव्य मंदराचल को सुदर्शन आल्वार के उपयोग से ही काट कर लाये थे। वराह अवतार में वराह के दांत के रूप में सुदर्शन राज थे। नृसिंह अवतार में भगवान नृसिंह के नख के रूप में चक्रराज थे। वामन अवतार में दूर्वा के रूप में सुदर्शन आल्वार थे, जिसे भगवान वामन ने पवित्रा के रूप में धारण किया था और दुर्वा से ही दैत्य गुरु शुक्राचार्य जी के एक नेत्र को फोड दिया था।

परशुराम अवतार में परशु की धार में सुदर्शन राज थे। रामावतार में भगवान रामजी ने शारंग धनुष को धारण किया था। कृष्णावतार में भगवान पांचजन्य शंख और चक्रराज दोनों को धारण किया था, इस एक ही अवतार में भगवान ने दो आयुध साथ रखे थे। श्री सम्प्रदाय में दशावतार में बलराम अवतार को मानते हैं, इस अवतार में भगवान कौमुदकी गदा धारण किया था, इनका हल ही सुदर्शन स्वरूप था। कल्कि अवतार में भगवान नन्दक खड्ग को धारण करेंगे, ऐसी मान्यता है।

हमारे आल्वार संतों में तिरुमोलिशै आल्वार (भक्तिसार योगी) भगवान के दिव्य आयुध श्रीसुदर्शनजी के ही अंशावतार हैं, इसलिये उनके एक चरण के अंगूठे में तीसरा नेत्र था। भगवान शंकरजी से युद्ध के समय इसी नेत्र से सुदर्शनजी की तरह ही ज्वालायें निकली थी।

सुदर्शन महाज्वाल सूर्य कोटि समप्रभ।
अज्ञानान्धस्य मे देव विष्णुर्मार्ग प्रदर्शये।।

इस रूप में सुदर्शन चक्र साक्षात् श्रीमन्नारायण के रूप में, प्रतीक के रूप में, एक आयुध के रूप में, नित्य सूर के रूप में, भगवान विष्णु के अभिन्न अंग के रूप में वर्णित व चित्रित देखा जाता है। सुदर्शन चक्र दुष्टों के लिए सिंह स्वप्न है तो शिष्टों के लिए महारक्षक कवच है।

जय श्रीमन्नारायण।

STATEMENT ABOUT OWNERSHIP AND OTHER PARTICULARS ABOUT

SAPTHAGIRI

(MONTHLY)
FORM IV
See Rule 8

1. Place of Publication	:	TIRUPATI
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Sri P. Ramaraju, M.A.
Whether citizen of India	:	Yes
Address	:	S.O.,T.T.D.Press Compound, K.T.Road, Tirupati.
4. Publisher's Name	:	**Dr. K. Radha Ramana,** M.A.,M.Phil., Ph.D.
Whether citizen of India	:	Yes
Address	:	Chief Editor Office, T.T.D.Press Compound, K.T.Road, Tirupati.
5. Editor's Name	:	**Dr. V.G.Chokkalingam,** M.A., Ph.D.
Whether citizen of India	:	Yes
Address	:	Chief Editor Office, T.T.D.Press Compound, K.T.Road, Tirupati.
6. Name and address of individuals who own the News paper and partners or share holders holding more than one percent of the Total Capital	}	Tirumala Tirupati Devasthanams

I, K. Radha Ramana, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

TIRUPATI
Date : 28-2-2023

(Sd.) Dr. K. Radha Ramana
Signature of the Publisher

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

अध्याय - 9

श्री महाविष्णु का श्री वेंकटेश्वर के रूप में वेंकटाचलवास तथा अवसरिक दर्शन

वेंकटाचल प्राकृतिक होते हुए भी असामान्य, पवित्र एवं महत्वपूर्ण है। यह वैकुंठ से पृथ्वी पर लायी गयी विष्णु की क्रीडाद्रि है। इसीलिए भगवान पृथ्वी पर यहीं रह रहे हैं। यह उनका अत्यंत प्रिय प्रान्त है। श्वेत वराह ने पहले उत्कृष्ट तथा उज्वल अपने विमान में श्री स्वामिपुष्करिणी तट पर वास बनाया। तत्पश्चात् दिव्य और सुंदर मूर्ति महाविष्णु ने श्रीदेवी और भूदेवी समेत हो शंख-चक्र धारी के रूप में श्रीनिवास नाम से यहाँ, स्वामिपुष्करिणी के दक्षिण प्रान्त में दिव्य-विमान को अपना वास ग्रहण किया। (वराह पु. - भाग-1, अध्याय - 34, श्लो. 23-27)

भगवान के अन्य नामों में वेंकटेश्वर और वेंकटेश प्रसिद्ध हैं। वेंकटेश्वर मायावी और सर्वशक्तिवान हैं। वे विश्वजनीन शक्ति संपन्न और लीला-परवशः (लीला पुरुषोत्तम) हैं। एक समय पर वे अपनी देवी श्री महालक्ष्मी जी के साथ वेंकटाद्रि पर विहरण कर रहे थे। उस समय कुछ मुनि यहाँ यज्ञ-यागादि कार्यों में अपने को अर्पित कर उत्कृष्ट रूप से चला रहे थे। क्योंकि यह स्थल अत्यंत पवित्र और दिव्य था। यज्ञ आदि के लिए उपयुक्त प्रान्त था। विष्णु भगवान की साधना में वे लगे थे। श्रीदेवी समेत होकर श्रीनिवास उस प्रान्त में विहार करते पहुँचे। मुनियों ने उन्हें एक राजा समझा। परन्तु दिव्य प्रकाश को बिखेरती उनकी उज्वल कान्ति से वे हतप्रभ भी हुए। उनके पास पहुँचनेवाले श्रीनिवास से मुनियों ने पूछा- ''हे राजन्! आप कौन हैं? अपके माता-पिता कौन हैं? आपका नाम क्या है?''

उक्त प्रश्नों के उत्तर में भगवान ने कहा- ''असल में मैं राजा नहीं हूँ। मेरा कोई वर्ण नहीं है। मैं न ब्राह्मण हूँ, और न क्षत्रिय, न वैश्य हूँ और न ही शूद्र। मेरे माता-पिता भी नहीं हैं। मेरा कोई निश्चित वास भी नहीं है। मैं सर्वत्र रहता हूँ। मैं सब कुछ खाता हूँ। मैं सर्वत्र घूमता हूँ। मैं अनेक रूप धारण करता हूँ। मेरा अपना कोई नाम नहीं है। मैं गुणों से मुक्त हूँ। मैं आप से एक ही बात कहना चाहता हूँ। केवल आप लोगों से मिलने आया हूँ।'' (वराह पु. - भाग-1, अ. - 37, श्लो. 20-21)

नाहं राजा न वा विप्राः कचिज्ञातिश्च नैव मे।
न च माता न च पिता नैवा आवासश्च कुत्रचित।।

(श्लोक 20)

सर्वावासः सर्व भक्षस्सर्वग स्सर्वरूपाधृता
निर्नामा निर्गुणश्च अहं युष्मान द्रष्टुमिह आगतः।।

(श्लोक 21)

इसके बाद उन्होंने यज्ञ विधान में कुछ कमियों को दिखाकर उनके औचित्य पर प्रश्न किया। लेकिन मुनियों ने कोई जवाब दिया। इतना ही नहीं यागाग्नि में 'वपा' (मज्ञा) को निर्धारित समय पर डालने के लिए उद्यत हुए। उसी समय पर यज्ञ कुण्ड से शंख-चक्र धारी, उज्वल आभरणों से विभूषित, श्रीवत्सांकित वक्षःस्थल वाले स्वामी उभरे। अपने हाथ फैलाकर 'वपा' को अपने हाथों में ले लिया। मुनि आश्चर्यचकित हो गये। भगवान ने जोर से कहा- ''मुझे संतोष है।'' बस वे अन्तर्धान हो गये। भगवान विष्णु के दर्शन से मुनियों को संतोष हुआ। क्योंकि भगवान विष्णु ही यज्ञेश्वर हैं। उन्होंने स्वयं ''वपा'' को स्वीकार किया। मुनियों ने यज्ञ को पूरा किया।

एक बार लडका बनकर वेंकटाद्रि पर विहरण कर रहे थे, प्रभु। एक बूढ़ा जो अंगों से शिथिल और दुर्बल, अन्धा और कुछ बहरा ब्राह्मण था, अपने आश्रम तक ले जाने के लिए अपने पुत्र को ''कुमार, कुमार'' चिल्ला चिल्लाकर पुकार रहा था। भगवान वेंकटेश ने जो बच्चे के रूप में वहाँ थे, अपने हाथ का सहारा दिया। एक जलधारा के पास ले गये। उस ब्राह्मण से कहा कि वह इस धारा में स्नान करें। स्नान के बाद वह वृद्ध ब्राह्मण एक युवक बन गया। वह अब सोलह वर्ष का युवक था। वेंकटेश ने उसे यौवन के साथ-साथ धन भी दिया। वह अपने आश्रम में लौटा। नित्य यज्ञ करने में लीन हो गया। भगवान ने उस ब्राह्मण को दिव्य दर्शन (एक सहस्र नयन, एक सहस्र वदन, सहस्र शिर, एक सहस्र हाथों) भी दिया और अन्त में अपने में मिलने का वर भी दिया। वह तीर्थ जिसमें स्नान से ब्राह्मण युवक बना था ''कुमारधारा तीर्थ'' नाम से प्रसिद्ध हो गया। (पृ. 33-34)

प्राचीन काल में चन्द्रवंश के शंखन नाम के राजा थे। संकास्य नामक नगर को राजधानी बनाकर शासन करते थे। सामंत राजाओं द्वारा वे पदच्युत हुए। राज्य खोकर वे तीर्थ यात्रा पर रामेश्वरम गये। राम सेतु के पास पवित्र स्नान किया। वापसी में सुवर्णमुखरी नदी के पास वे आये। उसमें भी पवित्र स्नान किया। फिर पद्मसरोवर पहुँचे और पवित्र स्नान किया। उन्होंने वहाँ पद्मावती देवी की पूजा की। वे अपने जीवन के संबन्ध में दुखी हुए। अपनी दीन स्थिति पर विकल हुए। उनको आगे बढने का कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा था। अपने खाने-पीने के बारे में उनके सामने चिंता थी। व्यथित हो लेटे। नींद लग गई।

नींद में ही उन्होंने एक दिव्य वाणी सुनी- ''हे राजन्! आप ज्ञानी हैं। आपको दुःखी होकर रहना नहीं चाहिए। यहाँ

से केवल दो मील की दूरी पर विश्व विख्यात पवित्र वेंकटाचल है। उस पर्वत पर कमलापति (विष्णु) वास कर रहे हैं। वे कामधेनु (पवित्र वरप्रदाता गाय), वे कल्पतरु (वरप्रदाता वृक्ष) हैं। भक्तों के लिए चिंतामणि (वरप्रदाता अमूल्य रत्न) हैं। भक्तों के कष्टों को दूर करनेवाले कलियुगनाथ हैं। उनके मंदिर के पास ही स्वामिपुष्करिणी है। उसके उत्तरी भाग में एक वल्मीक भी है। उसके पास आप एक कुटी बनाइए। उसमें रहते हुए श्री वेंकटेश भगवान की आराधना कीजिए। आपको पूजा कार्यक्रम छः महीने तक चलाना होगा। प्रतिदिन तीन बार उस पुष्करिणी में नहाकर आराधना करें। नित्य उपासना क्रम से आप को अपना राज्याधिकार अवश्य मिलेगा।''

ढाढ़स देनेवाली वाणी को सुनकर शंखन जाग गये। उसके मन को शांति मिली। वे वेंकटाद्रि पहुँचे। स्वामिपुष्करिणी तट पर वल्मीक पाया। पास ही भक्तपूर्ण हृदय से कुटी बनायी। पवित्र स्वामिपुष्करिणी में स्नान किया। अपना पूजा क्रम आरंभ किया। छः मास पर्यन्त अकुंठित दीक्षा से भगवान की आराधना और सेवा संपन्न की।

एक दिन भगवान अकस्मात स्वामिपुष्करिणी में प्रत्यक्ष हुए। उनका विमान देदीप्यमान था। श्रियःपति (विष्णु) शंख, चक्र, गदा आदि से युक्त थे। वे दिव्याभरणों से लसित थे। श्रीदेवी-भूदेवी समेत थे। उनके साक्षात्कार के कुछ ही क्षणों बाद ब्रह्म, मुनिगण, सिद्ध समूह, देवता लोग सब वहाँ उपस्थित हुए। देव दुंदुभियाँ बजने लगीं। अप्सरायें नृत्य करने लगीं। वेद पठन होने लगे।

शंखन आश्चर्यचकित हो गये। अपने ध्यान से बाहर आये। स्वामी के सामने प्रणमित हुए। भगवान से प्रार्थना भरे शब्दों से निवेदन किया- ''हे देवाधिदेव! आपकी कृपा से मुझे जो राज्य मिला था उसे शत्रु सामंत राजाओं ने छीन लिया है। मुझे पदच्युत किया। हे जगन्नायक! मुझ पर दया दिखाइए। मेरी रक्षा कीजिए। आपके दर्शन से मैं संतुष्ट हूँ। शरणागत हूँ।''

भगवान ने राजा से कहा- ''जिस दिन आपने स्वामिपुष्करिणी में पवित्र स्नान किया है उसी दिन आपको अपना राज्य प्राप्त हो गया है। जो इस स्वामिपुष्करिणी में संपूर्ण विश्वास और पवित्र हृदय से स्नान करेगा उसे स्वामित्व प्राप्त हो ही जाता है। वह भी उनके विश्वास और भक्ति की मात्रा के अनुरूप ही मिलेगा। आपने विशुद्ध मन से मेरी उपासना की है। आपको फल मिल गया है। अब आप अपने राज्य की ओर जाइए। राज्य प्राप्त कीजिए और धर्मानुसार शासन कीजिए।'' शंखन से इतना कहकर स्वामी अदृश्य हो गये।

शंखन के राज्य में सामंत राजाओं के बीच मन-मुटाव बढे थे। आपसी कलह हुए। हर एक ने चाहा कि संपूर्ण राज्य उसी के अधीन हो। इसके कारण सबका विनाश हुआ। राज्य की स्थिति से प्रजा व्यथित थी। किसी कमजोर राजकुमार को अधिकार देना नहीं चाहती थी। ऐसे ही समय पर शंखन ने राज्य में प्रवेश किया। अपना सिंहासन पाया। प्रजा का आदर्श पालन किया।

(वराह पु. - भाग-1, अ. 38)

(इस कथा का संक्षिप्त संकेत पहले ही किया गया है।)

क्रमशः

(गतांक से)

हिंदू मंदिर और ध्वजस्तंभ

- आचार्य आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
मोबाइल - 7842441868

ध्वजस्तंभ और मयूर ध्वज :

महाभारत पुराण में ध्वजस्तंभ और मयूर ध्वज से संबंधित एक रोचक और महत्वपूर्ण कथा वर्णित है। ध्वजस्तंभ का वैशिष्ट्य क्या है? उस की पूजा क्यों की जाती है? इन प्रश्नों का समाधान इससे होता है।

महाभारत के युद्धोपरांत सिंहासन पर आरूढ युधिष्ठिर अपने भाईयों की सहायता से सुशासन शुरू करता है। धर्म के मार्ग पर चलते दान-धर्म करके राज्य को कुशाल बनाता है। किंतु महादाता के रूप में स्थापित होने के लोभ में निरंतर अति दान धर्म करते रहने से श्रीकृष्ण को यह अच्छा नहीं लगता है। वे युधिष्ठिर को सबक सिखाना चाहते हैं। इसलिए वे युधिष्ठिर को अश्वमेध याग करके अपने साम्राज्य विस्तार करने के साथ-साथ राज्य सुरक्षित और कुशाल बनाने की सलाह देते हैं। युधिष्ठिर इस के लिए तैयार होता है। यागाश्व को छोड कर उस की रक्षा में नकुल और सहदेव को भेजता है। यागाश्व परिभ्रमण करते करते मणिपुर राज्य पहुँचता है। मणिपुर का राजा मयूर ध्वज है। वह महापराक्रमी और महादाता भी है। मयूर ध्वज के पुत्र ताम्र ध्वज यागाश्व को रोकता है। ताम्र ध्वज के साथ युद्ध में नकुल, सहदेव समेत भीमार्जुन भी हार जाते हैं। यह जानकर युधिष्ठिर को गुस्सा आता है। स्वयं युद्ध करने के लिए तैयार होता है। किंतु उसे श्रीकृष्ण रोकते हैं। मयूर ध्वज को हराने के लिए उसे एक कपटोपाय बताते हैं। उस के अंतर्गत श्रीकृष्ण और युधिष्ठिर दोनों वृद्ध ब्राह्मणों के वेश में मयूर ध्वज के पास दान मांगने जाते हैं। दान मांगते हैं। उन की दीनावस्था को देखकर मयूर ध्वज उन्हें दान देने तैयार होता है। तब श्रीकृष्ण उससे कहते है कि जंगल के रास्ते से आते समय उन्हें एक शेर ने इस के बेटे को पक्रडा है। बच्चे को छोडने की प्रार्थना करने पर उस शेर ने मानुष्य भाषा में कहा कि अगर तुम अपने पुत्र को बचाना चाहते हो तो इस राज्य के राजा मयूर ध्वज के शरीर के आधा मांस काट कर

मुझे देने से तुम्हारे पुत्र को छोड दूंगा, कहा है। इसलिए प्रभु हम पर दया करके अपने शरीर के आधे हिस्से को काट कर दान में हमें दे कर उस के पुत्र को बचा लीजिए। इस विचित्र दान को देने के लिए भी मयूर ध्वज तैयार होता है। तब श्रीकृष्ण एक और शर्त लगाते हैं कि राजा के शरीर को उस की पत्नी और पुत्र को ही काटना चाहिए। इसके लिए भी मयूर ध्वज राजी होता है। मयूर ध्वज के दान गुण को देखकर युधिष्ठिर को बडा आश्चर्य होता है। मयूर ध्वज की पत्नी और पुत्र मिलकर मयूर ध्वज के शरीर को काटने लगते हैं। तब उस की बाएँ आँख से आँसू बहने लगते हैं। तब युधिष्ठिर राजा से कहता है कि इस रूप में दुःखी होकर दान करने से वे स्वीकार नहीं करेंगे। तब राजा मयूर ध्वज जवाब देता है कि आधा शरीर दान में देने से उसे कोई दुःख नहीं है। इसलिए बाएँ आँख से आँसू नहीं बह रहे हैं। बल्कि इसलिए कि दाएँ आधा शरीर दान में दिया जा रहा है। इससे उसका प्रयोजन हुआ है। उसे पुण्य मिलेगा। मुझे ऐसा भाग्य क्यों नहीं मिला। इस कारण से ही बाई आँख से आँसू निकल रहे हैं। उस की इस दानशीलता को देखकर युधिष्ठिर की आँखे खुल जाती हैं। इससे प्रभावित होर श्रीकृष्ण मयूर ध्वज को अपने निज रूप दर्शन देते हैं। साथ ही वरदान मांगने के लिए कहते हैं। तब मयूर ध्वज मांगता है कि 'हे परमात्मा! मेरे शरीर के नष्ट होने पर भी मेरी आत्मा परोपकार करते प्रयोजनकारी रहे और नित्य आप के सामने उपस्थित रहूँ, ऐसा वरदान दीजिए।' तब श्रीकृष्ण ने तथास्तु कहकर ऐसा ही वरदान दिया। मयुर ध्वज का अनुग्रह करते हुए श्रीकृष्ण ने कहा-- 'हे मयूर ध्वज! तुम्हारा दान गुण अमोघ है। आज से प्रत्येक मंदिर के सामने तुम्हारे नाम से ध्वजस्तंभ स्थापित होंगे। उन के आश्रय में सदा रहनेवाली तुम्हारी आत्मा नित्य भगवान के सान्निध्य में रहेगी। सर्व प्रथम तुम्हारे दर्शन करके परिक्रमा प्रणाम करने के बाद ही भक्तजन अपने इष्टदेव के दर्शन करेंगे। प्रति नित्य यदि कोई तुम्हारे पास दीप जलायेगा उन का जन्म धन्य होगा। तुम्हारे पास जलाये दीप रात में राहगिरों को रास्ता दिखायेगा।' तब से सारे मंदिरों के सामने ध्वजस्तंभ स्थापित करने की परंपरा व आचार चल पडा।

ध्वजस्तंभ के दर्शन करते समय इस मंत्र का जप करना चाहिए। भक्तजन इस मंत्र का जप करें--

ओम नमो स्तुते ध्वजाय सकल भुवन जन हिताय।
विभव सहित विमल चरित बोधकाय मंगलाय ते सततम्।।

मंदिरों में संपन्न होनेवाले विविध उत्सवों के दौरान ध्वजस्तंभ का उपयोग किया जाता है। विशेषकर ब्रह्मोत्सव आदि के समय ध्वजस्तंभ पर ध्वजपट फहराया जाता है। इस परंपरा का पालन तिरुमल के श्री वेंकटेश्वरस्वामी के मंदिर आनंदनिलय में तथा तिरुचानूर में माई पद्मावती के शांतिनिलय में भी किया जाता है। तिरुमल मंदिर में ब्रह्मोत्सवों के शुभारंभ में गरुडांकित ध्वजपट फहराया जाता है। इस कार्यक्रम को 'ध्वजारोहण' कहा जाता है। ध्वजारोहण से ही ब्रह्मोत्सवों का शुभारंभ माना जाता है। उसी प्रकार ब्रह्मोत्सवों के समापन के समय पुनःध्वजपट को उतारा जाता है। इस कार्यक्रम को 'ध्वजावरोहण' कहा जाता है। ध्वजस्तंभ से संबंधित ये दोनों कार्यक्रम अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। क्यों कि तिरुमल के श्री वेंकटेश्वर के मंदिर में तथा तिरुचानूर श्री पद्मावती माई के मंदिर के ध्वजस्तंभ का विधिवत वैखानस आगम के नियमों के अनुसार अर्चक स्वामियाँ पूजादी अनुष्ठान करके अष्ट दिक्पालकों को, सप्त ऋषियों को, सकल देवताओं को, मुनिगणों को स्वामीजी और माताजी के ब्रह्मोत्सवों में सहर्ष भाग लेने के लिए निमंत्रित करते गजपट/गरुडपट को ध्वजस्तंभ पर फहराते हैं। इस अद्भुत एवं अमोघ दृश्य को देखकर सारे भक्तगण पुलकित होते हैं। वैसे ही ब्रह्मोत्सवों के समापन के समय अर्चक स्वामी पूजादि अनुष्ठान करके ध्वजस्तंभ से गरुडपट/गजपट ध्वजस्तंभ से नीचे उतारते हैं। इस ध्वजावरोहण से ही ब्रह्मोत्सवों का समापन माना जाता है।

इस रूप में हिंदुओं के प्रत्येक मंदिर में ध्वजस्तंभ होते हैं। उन का महत्व भी मूल विराटों की पूजाओं से कम नहीं हैं। बल्कि मंदिर में ध्वजस्तंभ के होते ही उसे आलयत्व प्राप्त होता है।

ओम नमो वेंकटेशाया।

समाप्त।

(गतांक से)

श्रीवैष्णव दिव्यदेश-108

- श्रीमती विजया कमलकिशोर तापडिया
मोबाइल - 9482365339

27) तिरुक्कावळम् पाडि (तिरुनांगूर)

चेन्नै-तिरुची मेइन लाइन में शीर्काळि स्टेशन से बस मार्ग पर लगभग 12 कि.मी. है। (चेन्नै से शीर्काळि स्टेशन 261 कि.मी. है।)

मूलमूर्ति - गोपाल कृष्णन - कण्णन। (राजगोपालन) रुक्मिणी, सत्यभामा सहित पूर्वाभिमुखी खडे दर्शन देते हैं।

तायार (माताजी) - मडवरल मंगै, चेंगमल वल्लि नाच्चियार, रुक्मिणी, सत्यभामा।

तीर्थ - तडमलर्प्पोय्है।

विमान - स्वयंभू विमान - वेदमोद विमान।

प्रत्यक्ष - सेनैनाथ, रुद्र तिरुनांगूर 11 गरुड सेवा पुष महीने में उत्सव में पधारते हैं।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 10 दिव्य पद।

28) तिरुक्कालि श्रीराम विण्णहर (शीरहालि)

यह दिव्य क्षेत्र चेन्नै-तिरुची मेइन लाइन में 261 कि.मी. पर है।

मूलमूर्ति - तिरुविक्रमन, ताडाळन् पूर्वाभिमुखी खडे पंचायुध भूषित दर्शन देते हैं। बाएं चरण को उठाकर लोक नापने की मुद्रा (मूर्ति) दाएं हाथ दान हस्त, बाएं हाथ बाएं चरण पर है।

उत्सव - तिरुविक्रम नारायणन्।

तायार (माताजी) - लोकनायकी, मट्टविक्कुळलि (उत्सव)।

तीर्थ - शंख पुष्करिणी चक्रतीर्थ।

विमान - पुष्कलावर्त विमान।

प्रत्यक्ष - अष्ठकोण महर्षि! यहीं पर तिरुमंगै आल्वार ने नालु कवि पेरुमाल (चार प्रकार की कविता रचना वाले कवि पेरुमाल) एवं भेंट स्वरूप एक 'वेट्रिवेल' प्राप्त की (उपाधि प्राप्त की) यहाँ श्रीराम के लिए एक सन्निधि है। (मंदिर है) इसलिए श्रीराम विण्णगर है। यहाँ सेल्वनायकन सन्निधि भी है। यहाँ से तिरुनांगूर दिव्यदेश (कुल 11) जा सकते हैं।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 10 दिव्य पद।

29) तिरुअरिमेय विण्णगरम (तिरुनांगूर)

यह दिव्य क्षेत्र तिरुनांगूर में है जो शीरकाळि स्टेशन से 8 कि.मी. दूरी पर है। चेन्नै-तिरुच्ची मेइन लाइन में चेन्नै से शीरकाळि 261 कि.मी. है। यह क्षेत्र कुडमाडुकूत्तन कोइल नाम से प्रसिद्ध हैं। तिरुनांगूर मंदिर से निकट है।

मूलमूर्ति - कुड़माडुकूत्तन। पूर्वाभिमुखी आसीनस्थ दर्शन देते हैं।

उत्सव - चतुर्भुज गोपालन।

तायार (माताजी) - अमृतघटवल्लि।

तीर्थ - कोटि तीर्थ, अमृत तीर्थ।

विमान - उच्छृंग विमान।

प्रत्यक्ष - उदंग मुनि।

मंगलाशासन - एक आल्वार, 10 दिव्य पद। यह भगवान तिरुनांगूर के 11 गरुड़ सेवा उत्सव में पधारते हैं। निम्नलिखित चार मंदिर (दिव्य क्षेत्र) तिरुनांगूर में एक ही गली में पास-पास स्थित है।

क्रम संख्या

तिरुअरिमेय विण्णगर - 29

तिरुवण् पुरुषोत्तमर - 30

तिरुमणि माडक्कोविल - 32

तिरुतेट्टियंबलम - 36

इनका विवरण आगे दिया जाता है।

क्रमशः

आयुर्वेद

इलायची के स्वास्थ्य लाभ

- डॉ.सुमा जोषि, मोबाइल - 9449515046.

मसाले खाना पकाने का एक अभिन्न हिस्सा हैं, न केवल वे प्रत्येक व्यंजन में स्वाद और रंग जोडते हैं, बल्की औषधीय गुणों को भी शामिलत करते हैं। इलायची को ''मसालों की रानी'' कहा जाता है। इसमें एक विशिष्ट पुष्प सुगन्ध और मीठा स्वाद है। यह एशिया महाद्वीप का मूल निवासी है, लेकिन अब इसकी खेती ग्वाटेमाला, तंजानिया और मलेशिया जैसे कई अन्य देशों में की जाती है। यह दुनिया के सबसे महंगे मसालों में से एक है।

इलायची का उपयोग मुख्य रूप से भारतीय और मध्य पूर्वी खाना पकाने में किया जाता है। इसके मीठे स्वाद के कारण, चाय और कॉफी में भी इसका प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा, सांसों को तरोताजा करने के लिए भोजन के बाद अक्सर इसे चबाया जाता है।

आयुर्वेद में इलायची दो प्रकार की होती हैं। हरि इलायची - Elettaria Cardamomum और काली इलायची- Amomum Subulatum. इलायची की प्रत्येक किस्म के अलग-अलग स्वास्थ्य लाभ, स्वाद और गन्ध हैं।

आयुर्वेदिक गुणधर्म

रस - स्वाद में मधुर और थीका। **गुण -** हलका, शुष्कता। **विपाक -** पचने के बाद थीका रस बचता है। **वीर्य -** शीत। यह कफ और वात दोषों के लिए अच्छा है।

प्रयोण्यांग : बीज - 0.5 से 1 gram.

आयुर्वेद में इलायची के सम्भावित स्वास्थ्य लाभ

प्रतिउपचारक गतिविधि - इलायची एंटी ऑक्सिडेंट्स से भरपूर होती है, जो कोशिकाओं को मुक्त कट्टरपंथी क्षति से बचाने के लिए दिखाया गया है जो सूजन और समय से पहले उम्र बढ़ने का कारण बन सकता है। श्वसन स्वास्थ्य का समर्थन करता है। काली इलायची श्वसन मार्गों को चिकना बनाकर सर्दी और खांसी को शान्त करने में मदद करती है।

इलायची को पाचन एंजाइमों के स्राव को उत्तेजित करके अपच, गैस और सूजन को कम करने के लिए उपयुक्त है जो मसाले को सूंघने और चखने सक्रिय होते हैं।

इलायची के तेल में पाए जानेवाले सिनेओल नामक फाइटोकेमिकल में रोगाणुपरोधी और जीवाणुरोधी गुण पाए गये हैं जो अच्छे मैखिक स्वास्थ्य का समर्थन करते हैं। अपने मूत्रवर्धक प्रभावों के कारण, इलायची मूत्र पथ, गुर्दे और मूत्राशय से विषाक्त पदार्थों को साफ करने में सहायता करती है। इलायची फाइबर का एक समृद्ध स्रोत है (1 चम्मच में 2 ग्राम फाइबर)। इसके मूत्रवर्धक प्रभावों के साथ फइबर सामग्री रक्तचाप को कम करने में मदद कर सकती है।

मोटापे से ग्रस्त चूहों पर इलायची के स्वास्थ्य लाभों पर एक अध्ययन में पाया गया की इलायची

पाउडर के साथ पूरकता से रक्तशर्करा के स्तर में काफी सुधार हुआ। इलायची के गर्भ प्रभाव चयापचय को आयुर्वेदिक दृष्टिकोण से बढाता देते हैं, क्योंकि पित्त दोष चयापचय को नियंत्रित करता है।

इलायची विटमिन-सी का एक समृद्ध स्रोत है जो प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाता देने के लिए सिद्ध हुई है।

पौष्टिक और स्वादिष्ट आयुर्वेदिक स्लीप टॉनिक बनाने के लिए इलायची पाउडर का उपयोग अवसर कई अन्य सामग्रियों के साथ किया जाता है।

एक गिलास पानी में तेल की कुछ बूंदें गौस्ट्रिक परेशानी के लिए मददगार हो सकती है। कुछ बूंदों को तेल में मिलाकर त्वचा पर मालिश करने से ऐंठन को कम करने में मदद मिल सकती है।

इलायची एक शक्तिशाली बलगम नाशक है। इलायची छिद्रों को खोलता है। हल्के पसीने को प्रोत्साहित करता है। जो त्वचा को साफ करता है। यह लसीका प्रणाली को साफ करता है।

अस्थमा के रोगियों में सांस लेने में सुधार करने में मदद करता है। इलायची भारी जडी-बूटियाँ जैसे शतावरी, अश्वगन्धा, विदारी और बला-सुलभ से पचाने में सहायक हैं।

इलायची से भरे आराम और शान्त करनेवाले पेय पीना किसी के मूड को बेहतर बनाने का एक तरीका हो सकता है। एक शोध गतिविधि के निष्कर्षों से पता चला है कि इलायची का अर्क उन जीवाणुओं को नष्ट करने में प्रभावी था जो मसूडों की बिमारी या संक्रमण का कारण बन सकते हैं।

कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि इलायची चयापचय सिंड्रोम के कुछ पहलुओं जैसे मोटापा, उच्च रक्त शर्करा, उच्च रक्त कोलेस्ट्रॉल, उच्च रक्तचाप में मदद कर सकती है। इलायची के कुछ फली को शहद के साथ पानी में भिगोएँ और इस इलायची की चाय को फ्लू के लिए एक प्रभावी प्राकृतिक उपचार के रूप में पियें।

अगर भारी भोजन के बाद इसका सेवन किया तो पाचन के लिए प्रभावी एंजाइमों के श्राव को सक्षम बनाता है। चीनी परंपरा के अनुसार इलायची की चाय पीना लम्बी उम्र का राज मान जाता है। इलायची, ऊर्जा चयापचय को बढ़ाती है और शरीर को अधिक कुशलता से वसा जलाने में मदद करती है।

इलायची के अधिक सेवन के दुष्प्रभाव

1) इलायची के अधिक सेवन से दस्त और निर्जलीकरण हो सकता है।
2) National Institutes of Health की रिपोर्ट है कि मतली उच्च मात्रा में इलायची के सेवन के सम्भावित दुष्प्रभावों में से एक है।
3) NIH के मुताबिक ज्यादा इलायची भी चक्कर आने का कारण बन सकती है।
4) दर्दनाक मासिक धर्म ऐंठन से पीडित हैं, तो इलायची ऐंठन की तीव्रता को बढ़ा सकती है।
5) गर्भवती महिलाओं को इलायची से बचना चाहिए क्योंकि यह गर्भाशय को उत्तेजित कर सकती है, जिससे गर्भपात या समय से पहले प्रसव हो सकता है।
6) Memorial Sloan-Kettering Cancer Center के अनुसार इलायची उन लोगों में रक्तस्राव के जोखिम को बढ़ा सकती है जो थक्का-रोधी दवाएँ लेते हैं क्योंकि इसमें रक्त को पतला करनेवाले गुण पायें जाते हैं।

वैद्य से जानकारी लेकर ही प्रयोग करें।

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य

हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

आयोजक - महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मणय्या

मोबाइल - 9949872149

त्रयोविंशः पाठः - तीसवां अध्याय

बालकस्य = बालक का	कुतः = कहाँ से	बालकानाम् = बालकों का
ततः = पश्चात्, वहाँ से	दन्तः = दांत	अतः = इसलिए

प्रार्थनाद्यर्थकम् = प्रार्थना पूर्वक

प्र. खादतु = खादन्तु - वह खाये = वे सब खाये

म. खाद = खादत - तुम खाओ = तुम सब खाओ

उ. खादामि = खादाम - मैं खाँऊ = हम सब खायें

प्रश्न : (अ)

1. बालकस्य दन्ताः नासन्।
2. एते बालकाः अन्नं खादन्तु।
3. त्वमपि झटिति स्नानं कृत्वाऽन्नं खाद।
4. अद्य ममान्नं मास्तु।
5. तर्हि किं खादिष्यसि।
6. फलानि खादिष्यामि।
7. युष्मद्गृहे फलानि सन्ति वा?
8. अनेकफलानि सन्ति।
9. बालकस्य जनकः भोजनम् अकरोत् न वा?
10. सः इदानीम् अस्मद्गृहस्य आरात् देवस्य नमस्कारान् करोति।

जवाब : (अ)

1. बालक के दांत नही थे।
2. इन बच्चों को अन्न खाने दो।
3. आप भी जल्दी स्नान करके अन्न खायें।
4. आज मुझे अन्न नहीं चाहिए।
5. तो क्या खाओगे।
6. फलों को खाऊँगा।
7. तुम्हारे घर में फल हैं, क्या?
8. बहुत फल हैं।
9. बालक के पिता ने भोजन किया या नहीं?
10. वह अब हमारे घर के समीप देव को नमस्कार कर रहा है।

प्रश्न : (आ)

1. मेरे दांत नहीं हैं।
2. इसलिए मैं फल नही खा रहा हूँ।
3. वे किसके घर हैं?
4. वे घर हमारे ही हैं।
5. हमारे घर पास (समीप) में ही है।
6. उस चारपाई पर कौन हैं?
7. उस बालक का बडा भाई।
8. वह इस फल को खाये।
9. तुम सब उस फल को खाओं।
10. नहीं तो उन फलों को हम खा रहें है।

जवाब : (आ)

1. मम दन्ताः न सन्ति?
2. तदर्थ फलानि न खादामि।
3. तानि गृहाणि केषाम्।
4. तानि गृहाणि अस्माकमेव।
5. अस्माकं गृहाणि सविधे एव सन्ति।
6. तस्मिन् मञ्चे के सन्ति?
7. तस्य बालकस्य अग्रजः।
8. इदं फलं सः खादतु।
9. तत् फलं यूयं खादन्तु।
10. नोचेत् तानि फलानि वयं खादामः।

मार्च महीने का राशिफल

- डॉ.केशव मिश्र

मोबाइल - 9989376625

मेष राशि - अपनों के सहयोग से कार्य क्षेत्रों में सफलता होगी। नौकरी में पदोन्नति, अतिरिक्त धन प्राप्ति का योग। सुख-सन्तोष की वृद्धि होगी। वस्त्र-अन्न-धनादि की प्राप्ति होगी। पारिवारिक सुख, दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा। धार्मिक सामाजिक कार्यों में रूचि बढेगी।

वृषभ राशि - उच्च वर्गों के लोगों से सम्पर्क होगा जिससे पदोन्नति और धनलाभ होंगे। स्वास्थ्य मध्यम रहेगा। नवीन कार्य व्यावसाय का आरम्भ होगा। धन लाभ योग। अपने मन की चंचलता को शांत रखे। धार्मिक कार्य संपादन होंगे। अपनों का सहयोग और मान सम्मान में वृद्धि होगी।

मिथुन राशि - व्यापारिक क्षेत्रों में असफलता, आमदनी से अधिक खर्च योग बन रहा है। नौकरी क्षेत्रों में सफलता। यश-प्रतिष्ठा में बढोत्तरी। आत्मविश्वास में बढोत्तरी होगी, जिससे वाक्शक्ति भरपुर बनी रहेगी, सफलता प्राप्त होंगे। शत्रुपक्ष-विरोधिपक्ष परास्त होंगे।

कर्कट राशि - रूके हुए काम में तेजी होगी। मित्र-कुटुम्बीजनों के सहयोग से कार्य में सफलता। व्यापार-व्यवसाय क्षेत्रों में उतार चढाव की स्थिति बनी रहेगी। कभी कभी मन खिन्न रहेगा, मनोबल कमजोर न होने दे। सुख-सन्तोष की वृद्धि होगी। धन खर्च होगा। अपनी वाणी पर नियन्त्रण रखें।

सिंह राशि - अपने मनोबल को बनाए रखें, मानसिक व्यथा रहेगी। पारिवारिक स्थिति से मनविचलित रहेगा, अपने कुटुम्बीजनों के साथ मिल जुलकर रहें। शरीर के ऊपर ध्यान रखे। बुजुर्गों के सम्पर्क में रहिए उनसे अपने बौद्धिक विकास करें।

कन्या राशि - इस माह आप धीरे-धीरे प्रगति पथ की ओर बढते रहेंगे। अपने कुशल व्यवहार से आप हर कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे, व्यावसायिक कार्यों में अत्यधिक धन लाभ होगा। पत्नी के स्वास्थ्य में सुधार रहेगा। दाम्पत्य जीवन सुखमय बना रहेगा। राजकीय कार्यों में पूर्ण सफलता प्राप्त होगी।

तुला राशि - कोर्ट-कचहरी मुकदमे में साधारण लाभ। बौदि्धक विकास, अनैतिक कार्यों में वृदि्ध होगी। धन लाभ, स्त्री-सन्तान मित्र कुटुम्बीजन का सुख सहयोग प्राप्त होंगे। शत्रुपक्ष कमजोर होगा। नया गृह निर्माण का सुयोग अवसर है। आय की अपेक्षा व्यय अधिक होगी।

वृश्चिक राशि - रूके हुये कार्यों में व्यवधान समाप्त होकर नवीन कार्य का सम्पादन होगा, अपने स्वभाव से उच्चवर्गों के साथ कार्यों का सुअवसर प्राप्त होंगे। अनाज की खरीद-बिक्री लाभदायक सिद्ध होगा। यत्र तत्र भ्रमण होने के कारण मन चिन्तित रहेगा। दौड भाग की जिन्दगी बनी रहेगी। पारिवारिक कलह होगी।

धनु राशि - कारोबारी क्षेत्रों में बहुत परिश्रम करने पर धन लाभ मिलेगा। आमदनी कम खर्च अधिक से मन खिन्न रहेगा जिससे पारिवारिक कलह उत्पन्न हो सकता है, इसलिए अपने वाणी के ऊपर नियन्त्रण रखे और सामंजस बनाकर चले। ऋण लेन-देन बढेगा।

मकर राशि - इस माह आपकी बुदि्ध प्रतिभा का विकास होगा, छात्रों के लिए समय अत्यन्त उपयोगी है प्रतियोगिता क्षेत्रों में लाभ, कोर्ट कचहरी, मुकदमा में सफलता। व्यापारिक क्षेत्रों से लाभ, सामान्य धन लाभ योग। शारीरिक शक्ति में वृद्धि, तीर्थाटन, पर्यटन का योग है।

कुंभ राशि - आपके लिए यह माह अन्न-धन, वस्त्र-आभूषण प्रदायक रहेगा। अपने स्वास्थ्य पर ध्यान दे। अच्छे लोगों की संगति व सहायता से अभ्युदय व बौद्धिक तथा शैक्षिक विकास होगा। दाम्पत्य जीवन सुखमय रहेगा।

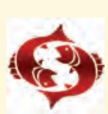

मीन राशि - अपने स्वभाव विचार के कारण लोगों से काम बना लेंगे। अत्यधिक उत्तेजित न हो पुराना फँसा हुआ धन थोडा थोडा करके वापस आयेगा। प्रशासनिक व्यक्तियों से सावधान रहे वरना अपमान सहना पड सकता है। पारिवारिक माहौल सुखद रहेगा, दाम्पत्य जीवन सुखमय बना रहेगा।

नीतिकथा

समस्या का समाधान

- श्री के रामनाथन,
मोबाइल - 9443322202

*क्रोधाधावती सम्मोहः सम्मोबतस्मृतिविभ्रमहः।
स्मृतिभ्रंशाद बुद्धिनाशो बुद्धिनाशातप्रनश्यति।।*

(गीता अध्याय २ - श्लोक ६३)

इसका मतलब यह है कि क्रोध से मोह या मूढ भाव उत्पन्न होता है। क्रोध से उत्पन्न मूढता से स्मृति का नाश होता है और उससे ज्ञान का भी नाश होता है। बुद्धिनाश से मनुष्य अपनी स्थिति से बहुत नीचे गिर जाता है।

एक बार भगवान कृष्ण अपने भाई बलराम और अर्जुन के साथ एक घने जंगल को पार कर रहे थे। तब तक आधी रात हो गयी थी और वे भी थक गये थे। इसलिए तीनों ने कहीं एक स्थान पर ठहरने का निश्चय किया।

उस घने जंगल में खूँकार जानवरों के होने के भय से उन तीनों ने निश्चय किया कि एक साथ उन तीनों को सोना नहीं चाहिए। एक को क्रम से रात में हर पहर के लिए रक्षा कार्य करना चाहिए। उस समय बाकी दो लोग निर्भय और निश्चिंत सो सकते हैं। तीनों ने इस बात को मान लिया। तब अर्जुन ने कहा कि मैं प्रथम पहर में रक्षा कार्य करता हूँ। उसे मानकर भगवान कृष्ण और बलराम दोनों पेड के नीचे सोने के लिए चले गये।

अर्जुन अपना पहरा कार्य बडी सावधानी से कर रहा था। तब यकायक पेड के निकट घना धुआँ निकल पडा। उसके बीच से एक डरावना रूप निकल पडा। उस रूप ने देखा कि पेड के नीचे दो व्यक्ति सो रहे हैं और एक रक्षा कार्य कर रहा है। तब वह रूप गहरी नींद में सोते भगवान कृष्ण और बलराम के पास जाकर उनको तंग करने लगा। यह देखकर अर्जुन एकदम क्रोधित हो उठा और उसने उस डरावने रूप के निकट जाकर उसे भगाने का प्रयास किया। तब उस भयंकर रूप ने अर्जुन को देखकर कहा, ''मैं, सोते इन दोनों को मारने वाला हूँ, उसके लिए तेरी मदद चाहिए।'' यह सुनकर और उस रूप के व्यवहार को देखकर अर्जुन का क्रोध और बढता रहा। अर्जुन का क्रोध बढते बढते उस रूप का बल भी बढता रहा। यह देखकर अर्जुन थोडा डर गया। इतने में उस रूप ने अर्जुन को हराकर वहाँ से ओझल हो गया।

अब दूसरा पहर प्रारंभ हो गया। इसलिए अर्जुन ने बलराम को जगाकर खुद सोने के लिए चला गया। बलराम भी बडी सावधानी से अपना रक्षा-कार्य कर रहा था। थोडे समय के बाद वहाँ उसके सामने फिर वह

डरावना रूप निकल पडा। उसने बलराम को देखकर कहा, ''अरे! मैं सोते उन दोनों को मारने वाला हूँ। उसके लिए तुम्हारी सहायता चाहिए।'' यह सुनकर बलराम उसे हराने के लिए लडने लगे। लेकिन उस रूप को हराना कठिन रहा। इससे बलराम का क्रोध अधिक होता रहा और उसी समय उस डरावाने रूप का भी बल और रूप अधिक बढता रहा। उसके बाद वह रूप बलराम को हराकर वहाँ से गायब हो गया।

अब तीसरा पहर प्रारंभ हो गया। इसलिए बलराम भगवान कृष्ण को रक्षा कार्य करने के लिए जगाकर खुद सोने के लिए चला गया। जब भगवान कृष्ण पहरा कार्य कर रहे थे, तब वह डरावान रूप फिर वहाँ आ गया। उस रूप को देखकर भगवान कृष्ण जोर से हँस पडे। उस डरावने रूप ने समझा कि भगवान कृष्ण उसके विकृत रूप को देखकर ही मजाक में ऐसा हँस रहे हैं। इसलिए वह गुस्सा करते हुए बडी तेजी से कृष्ण को मारने के लिए आगे आया। भगवान कृष्ण को उसके ऐसे कार्य से क्रोध नहीं हुआ। उन्होंने मधुर मुस्कान के साथ उस पर हमला किया। इससे उस रूप का बल थोडा कम हो गया और वह थोडा पीछे हटने लगा। यह देखकर भगवान कृष्ण जोर से हँसने लगे। उनके हँसते-हँसते उसका रूप और बल इतना कम हो गया कि आखिर वह कीडा सा बन गया। भगवान कृष्ण ने उस कीडे को उठाकर पेड के नीचे एक कोने पर रख दिया।

अगले दिन जब सूर्य का उदय हुआ, तब अर्जुन और बलराम जाग उठे। वे दोनों रात में मिले अपने अनुभव के बारे में भगवान कृष्ण को बताने लगे। तब भगवान कृष्ण ने पेड के नीचे रखे उस कीडे को दिखाकर बताया, ''तुम दोनों ने रात में इस रूप के साथ ही युद्ध किया था। तुम दोनों ने बडे क्रोध के साथ अपनी लडाई की थी। तुम दोनों का क्रोध बढते-बढते उस रूप का बल भी बढता रहा। लेकिन मैंने हँसकर उस रूप का सामना किया। इसलिए उसका रूप और बल कम हो गया और अब वह कीडा बन गया।''

यह तो सच है कि क्रोध करने से बुद्धि कुंठित हो जाती है। जब हमें अकारण किसी समस्या का सामना करना पडता है तब मुस्कान के साथ उसका सामना करेंगे तो वह कीडा सा बनकर बलहीन हो जायेगी। इसलिए किसी भी दशा में क्रोध को नियंत्रण में रखेंगे तो हम अपने कार्य में सरलता से सफलता को हासिल कर लेंगे।

जनवरी-2023 महीने का क्विज-6 के समाधान

1) श्री कल्याण वेंकटेश्वर स्वामीजी,
2) भोगि, संक्रांति, कनुमा, 3) श्रीपंचमी,
4) माँ सरस्वती, 5) कुबेर, 6) श्रीराम,
7) रथसप्तमी के दिन, 8) ध्वजारोहण,
9) श्रवणा नक्षत्र, 10) रथसप्तमी,
11) दमयंती, 12) देवेंद्र, अग्नि, वरुण और यम,
13) 'नल' महाराज,
14) ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्वणवेद,
15) मरकतवल्लि तायार.

जनवरी-2023 महीने का क्विज-6 के समाधान के विजेता

चि.उन्नह राहुल बंज,
चंदा नंबर : LH1381.

चित्रकथा

मत्स्यावतार

तेलुगु मूल - श्री डी.श्रीनिवास दीक्षितुलु
अनुवाद - डॉ.एम.रजनी
चित्रकार - श्री के.द्वारकनाथ

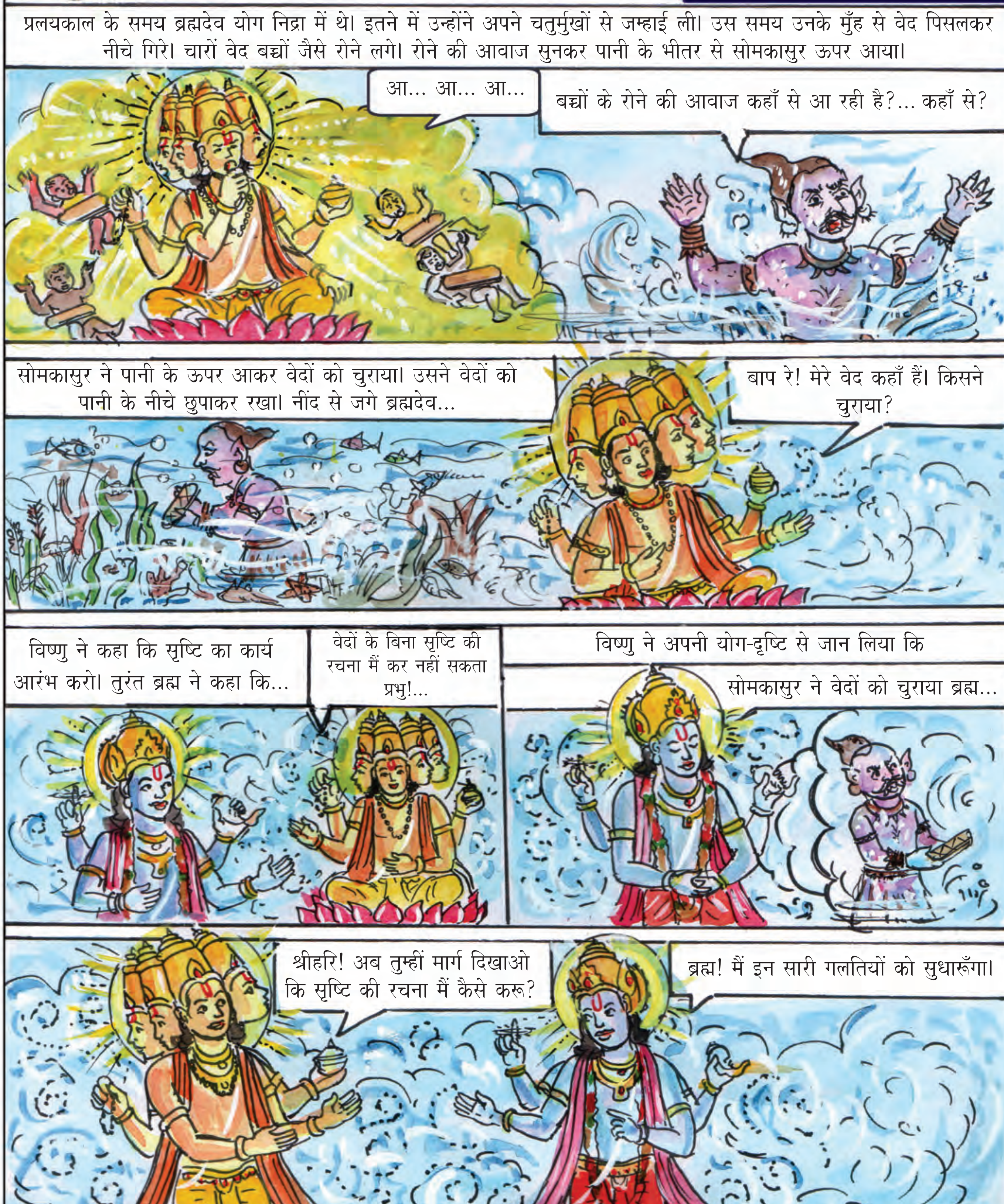

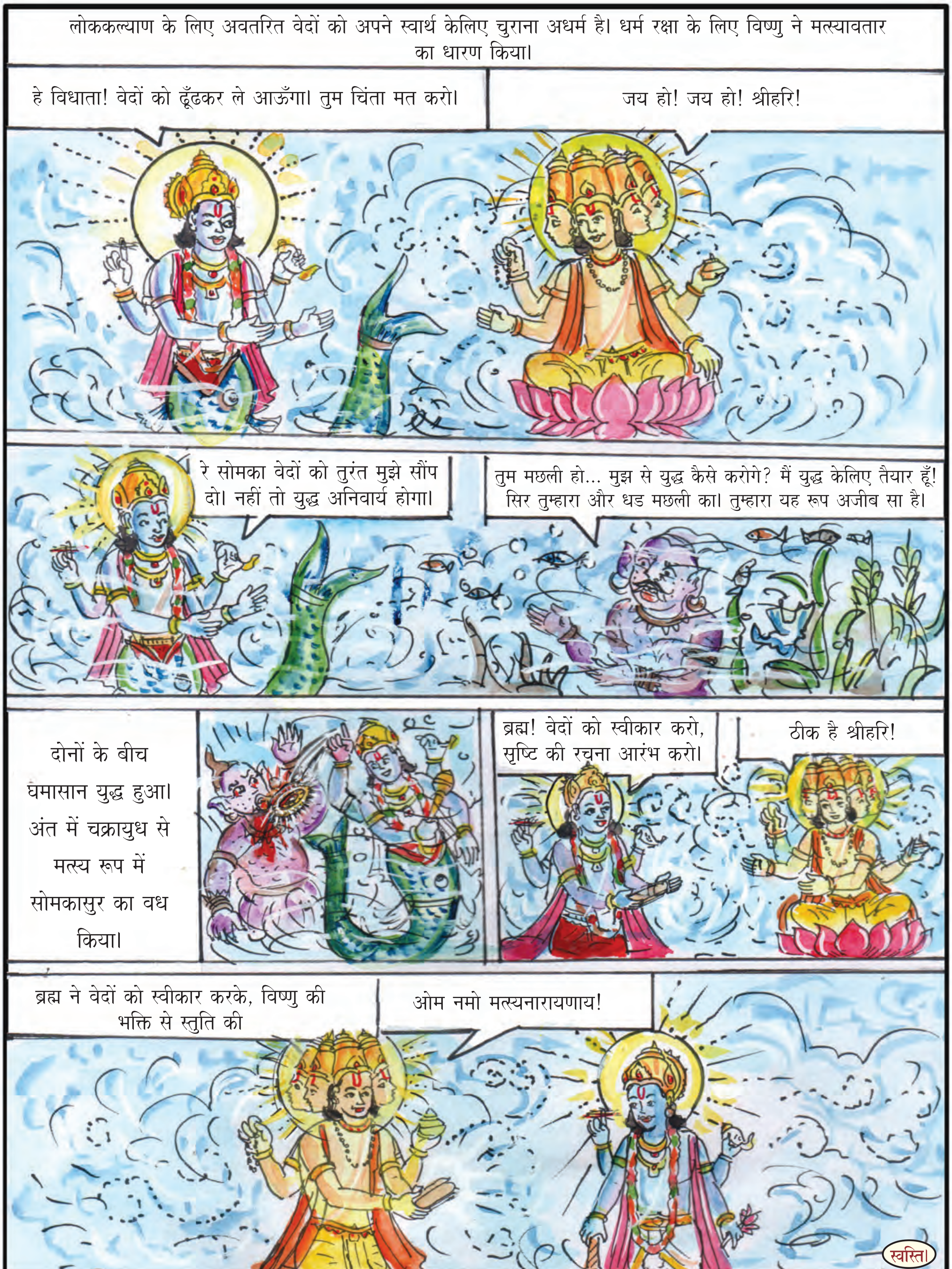
लोककल्याण के लिए अवतरित वेदों को अपने स्वार्थ केलिए चुराना अधर्म है। धर्म रक्षा के लिए विष्णु ने मत्स्यावतार का धारण किया।
हे विधाता! वेदों को ढूँढकर ले आऊँगा। तुम चिंता मत करो।
जय हो! जय हो! श्रीहरि!
रे सोमका वेदों को तुरंत मुझे सौंप दो। नहीं तो युद्ध अनिवार्य होगा।
तुम मछली हो... मुझ से युद्ध कैसे करोगे? मैं युद्ध केलिए तैयार हूँ! सिर तुम्हारा और धड मछली का। तुम्हारा यह रूप अजीब सा है।
दोनों के बीच घमासान युद्ध हुआ। अंत में चक्रायुध से मत्स्य रूप में सोमकासुर का वध किया।
ब्रह्म! वेदों को स्वीकार करो, सृष्टि की रचना आरंभ करो।
ठीक है श्रीहरि!
ब्रह्म ने वेदों को स्वीकार करके, विष्णु की भक्ति से स्तुति की
ओम नमो मत्स्यनारायणाय!
स्वस्ति।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

प्रश्नोत्तरी (क्विज) की नियमावली

1) प्रश्नोत्तरी की प्रतियोगिता केवल 15 वर्षों के अंदर बच्चों के लिए है।
2) भाग लेने वाले बच्चे हिंदु धर्म के होना अनिवार्य है।
3) इस प्रश्नोत्तरी में भाग लेने वाले बच्चों के अभिभावक अनिवार्य रूप से ति.ति.दे. के द्वारा प्रकाशित होने वाली 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक मासिक पत्रिका का चंदादार होना आवश्यक है। प्रश्नोत्तरी के जवाबों के साथ अनिवार्य रूप से चंदादार की अपनी चंदा संख्या, नाम, पता, पिन-कोड के साथ फोन नंबर भी स्पष्ट रूप से लिख कर हमारे कार्यालय को भेजना चाहिए।
4) प्रश्नोत्तरी के जवाब, प्रश्नों के नीचे सूचित खाली जगहों पर लिख कर भेजना चाहिए।
5) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र ओरिजनल या जिराक्स प्रति मान्य है।
6) जवाबों में कोई काट-छांट या सुधार नहीं होना चाहिए।
7) प्रश्नोत्तरी के जवाब पत्र **इस महीने का 25वाँ तारीख** के अंदर पहुँचाने की अंतिम तिथि है।
8) इस प्रश्नोत्तरी या क्विज में सही जवाब लिखने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को मात्र ही 'लक्कीडिप पद्धति' में चुन कर विजेताओं की घोषणा की जाती है।
9) घोषित विजेताओं के नाम आगामी मास की 'सप्तगिरि' पत्रिका में प्रकाशित किए जाते हैं।
10) ति.ति.दे. के प्रधान संपादक कार्यालय में कार्यरत कर्मचारियों के बच्चे इस प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के लिए अयोग्य हैं।
11) प्रश्नोत्तरी से संबंधित कोई भी समाचार फोन से नहीं दिया जाएगा। कृपया फोन से संपर्क न करें। ति.ति.दे. का निर्णय ही अंतिम है।
12) क्विज का समाधान भी इसी पुस्तक में है।

प्रश्नोत्तरी-जवाब कृपया इस पते पर भेजे :-

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे. प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507, तिरुपति जिला, आंध्र प्रदेश।

बच्चे का नाम..

लिंग/आयु..........., चंदा नंबर.......................

पता...

....

मोबाइल नं...

क्विज-8

1) श्री महाविष्णु ने कौन-से रूप में वेदों की रक्षा की है?
ज)..

2) वैकुंठ द्वार के पालकों के नाम क्या है?
ज)..

3) हिरण्यकश्यप के पुत्र का नाम क्या है?
ज)..

4) युधिष्ठिर ने कौन-सा याग करके अपना साम्राज्य का विस्तार किया है?
ज)..

5) मयूर ध्वज के दान स्वभाव को देखकर कौन आश्चर्य हुआ है?
ज)..

6) तिरुक्कालि श्रीराम विण्णहर (शीरहाळि) मंदिर के माताजी का नाम क्या है?
ज)..

7) तिरुअरिमेय विण्णगरम मंदिर का उत्सवमूर्ति का नाम क्या है?
ज)..

8) तिरुअरिमेय विण्णगरम मंदिर के विमान गोपुर का क्या नाम है?
ज)..

9) विदर्भ देश के राजा ने संतान प्राप्ति के लिए किस ऋषि से प्रार्थना की थी?
ज)..

10) महर्षि पुलह ने किस नदी के तट पर घोर तप किया है?
ज)..

11) धनुर्धरदास नामक पहलवान के साथ श्रीरंगम को जाने वाली महिला का नाम क्या है?
ज)..

12) भगवान सुदर्शन जी की पत्नियों के नाम क्या है?
ज)..

13) ति.ति.दे. द्वारा तिरुपति में स्थापित महिला कॉलेज का नाम क्या है?
ज)..

14) वेदों का अपहरण करनेवाले राक्षस का नाम क्या है?
ज)..

15) दशावतारों में प्रथमावतार कौन सा है?
ज)..

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

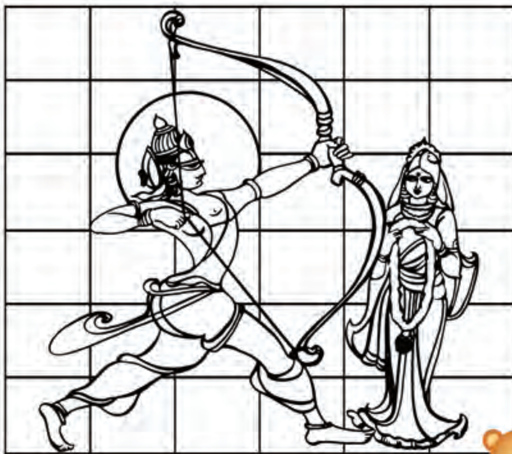

बगल में सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये-

निम्न लिखित को मिलाएँ!

1) लक्ष्मी	अ) परमेश्वर
2) सीता	आ) श्रीमहाविष्णु
3) पार्वती	इ) ब्रह्म
4) रुक्मिणी	ई) श्रीराम
5) सरस्वती	उ) श्रीकृष्ण

1) आ 2) ई 3) अ 4) उ 5) इ

श्री पद्मावती स्तुति

विष्णुपत्नि जगन्मातः
विष्णुवक्षस्थलस्थिते।
पद्मासने पद्महस्ते
पद्मावती नमोऽस्तुते।।

चित्र में अंतर खोजे!

चयन
1) फूल
2) चूड़ी
3) तितली
4) कान की बाली
5) फूलों का तोरण
6) नाक की बाली
7) बाल के लिए डालर

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

सप्तगिरि

(आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका)

चंदा भरने का पत्र

1. नाम : ....
(अलग-अलग अक्षरों में स्पष्ट लिखें) ....
....
पिनकोड ....
मोबाइल नं ....

2. वांछित भाषा : ☐ हिन्दी ☐ तमिल ☐ कन्नड
☐ तेलुगु ☐ अंग्रेजी ☐ संस्कृत

3. वार्षिक चंदा ☐ रु.240/-; जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) ☐ रु.2,400/-;
विदेशियों के लिए वार्षिक चंदा ☐ रु.1,030/-

4. चंदा का पुनरुद्धरण :
(अ) चंदा की संख्या :
(आ) भाषा :

5. शुल्क का विवरण :
धनादेश (BC's) / मांगड्राफ्ट संख्या (D.D.) /
भारतीय डाकघर (IPO) / ई.एम.ओ. (EMO) / :
दिनांक :

स्थान :
दिनांक : चंदा भरनेवाले का हस्ताक्षर

- वार्षिक चंदा : रु.240/-, जीवन चंदा (12 वर्ष ही मात्र) : रु.2,400/- 'प्रधान संपादक, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम से मांगड्राफ्ट लेकर निम्न सूचित पते पर भेज सकते हैं।
- नवीन चंदादार या चंदा का पुनरुद्धार करनेवाले इस पत्र के कूपन को काटकर, एक कागज पर चंदादार को अपने पूरे विवरण के साथ सुस्पष्ट लिखकर निम्न पते पर भेजना चाहिए।

प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस परिसर, के.टी.रोड,
तिरुपति-517 507. तिरुपति जिला, (आं.प्र)

धोखा मत खाओ!

हमारी दृष्टि में आया है कि कुछ लोग 'सप्तगिरि' आध्यात्मिक सचित्र मासिक पत्रिका की सदस्यता के लिए यह कह कर राशि वसूल करने में मग्न हैं कि वे श्री बालाजी के दर्शन, प्रसाद आदि की व्यवस्था करेंगे। ऐसे लोगों पर विश्वास न करें। उनसे सावधान रहें।

श्री बालाजी के दर्शन और प्रसाद पाने के लिए 'सप्तगिरि' पत्रिका कार्यालय से कोई संपर्क न करें। क्यों कि उन से पत्रिका कार्यालय का कोई संबंध नहीं है। कृपया चंदादार अपना चंदा नकद को सीधा 'प्रधान संपादक, सप्तगिरि कार्यालय, ति.ति.दे., तिरुपति' पता को भेजना पडेगा।

ति.ति.देवस्थान ने सदस्यता राशि लेने के लिए किसी व्यक्ति को नियुक्त नहीं किया। अतिरिक्त राशि का भुगतान न करें। दलालों पर विश्वास मत करें।

STD Code: 0877
दूरभाष :
2264359, 2264543.
संपादक : 2264360

कॉल सेंटर नंबर :
2233333, 2277777.

मंत्र
ॐ नमो वेंकटेशाय

Printed by Sri P. Ramaraju, M.A., and Published by Dr.K. Radha Ramana, M.A., M.Phil., Ph.D., on behalf of Tirumala Tirupati Devasthanams and Printed and Published at Tirumala Tirupati Devasthanams Press, K.T.Road, Tirupati-517 507. Editor : Dr.V.G. Chokkalingam, M.A., Ph.D.

तिरुमल श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी का प्लवोत्सव

दि. 03-03-2023 से
दि. 07-03-2023 तक

श्री कोदंडरामस्वामीजी को 03-03-2023

श्रीकृष्णस्वामीजी को 04-03-2023

श्री वेंकटेश्वरस्वामीजी को
05-03-2023 से 07-03-2023 तक

SAPTHAGIRI (HINDI) SPIRITUAL ILLUSTRATED MONTHLY Published by Tirumala Tirupati Devasthnams
Printing on 25-02-2023 & Posting at Tirupati RMS Regd. with the Registrar of Newspapers for
India under RNI No.10742/1957. Postal Regd.No.TRP/152/2021-2023
"LICENCED TO POST WITHOUT PREPAYMENT No.PMGK/RNP/WPP-04(2)/2021-2023"
Posting on 5th of every month.